भारत के सुदृढ़ भविष्य के लिए

MIDHANI

संकल्प

मिधानि की छहमाही राजभाषा गृह पत्रिका

ई-पत्रिका अंक 3 अप्रैल 2021 -सितंबर 2021 वर्ष 13, अंक 23

सागर की अतल गहराई से, आकाश तलक लहराते हैं।
हम भारत के धातुकर्मी, धातु से सोना बनाते हैं ।।

आजादी का अमृत महोत्सव

सत्यमेव जयते

भारत की स्वतंत्रता के 75 वर्ष के उपलक्ष्य में माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा 12 मार्च, 2021 को “आज़ादी का अमृत महोत्सव” की शुरुआत की गई। यह भारत की स्वतंत्रता की 75वीं वर्षगांठ अर्थात 15 अगस्त, 2023 तक चलेगा जबकि 15 अगस्त 2022 को स्वतंत्रता के 75 वर्ष पूरे होंगे।

नरेंद्र मोदी
प्रधानमंत्री, भारत सरकार

जी किशन रेड्डी
संस्कृति मंत्री
भारत सरकार

75वें स्वतंत्रता दिवस समारोह को स्मरणीय बनाने के उद्देश्य से केंद्रीय संस्कृति मंत्रालय के मार्गदर्शन में देश भर में 'अमृत महोत्सव' आयोजित किया जा रहा है।

रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने स्वतंत्रता के 75 वर्ष के उपलक्ष्य में 'आजादी का अमृत महोत्सव' मनाने के लिए रक्षा मंत्रालय के समर्पित सप्ताह 13-19 दिसंबर, 2021 तक में रक्षा उत्पादन विभाग (डीडीपी) के कई अहम कार्यक्रमों का उद्घाटन किया।

राजनाथ सिंह
रक्षा मंत्री ,भारत सरकार

संकल्प

मिधानि की छहमाही राजभाषा गृह पत्रिका
वर्ष-13, अंक – 23 अप्रैल'21 – सितंबर'21
ई-पत्रिका अंक 3

संपादक मंडल

संरक्षक
डॉ. संजय कुमार झा
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

परामर्शदाता
श्री एन. गौरी शंकर राव
निदेशक (वित्त)

श्री ए. रामकृष्ण राव
महाप्रबंधक (मानव संसाधन)

संपादन व डिजाइनिंग
डॉ. बी. बालाजी
उप प्रबंधक
हिंदी अनुभाग एवं निगम संचार

संपादन सहयोग
श्रीमती डी. वी. रत्न कुमारी
वरिष्ठ कार्यालय अधीक्षक

श्री वासुदेव
सहायक (हिंदी अनुवादक)

अपने लेख व सुझाव निम्नलिखित पते पर भेजें:
संपादक, संकल्प
मिश्र धातु निगम लिमिटेड,
कंचनबाग, हैदराबाद- 500058 (ते.रा.)
ई-मेल: b.balaji@midhani-india.in
फोन: 040-24184325
मोबाइल:8500920391, 9154004438

पत्रिका केवल आंतरिक वितरण एवं राजभाषा के प्रचार-प्रसार के लिए नि:शुल्क है।
पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने हैं। इनसे संपादक मंडल या मिधानि प्रबंधन का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

इस अंक में

- हिंदी दिवस पर संदेश ...02
- शुभाशंसा ...06
- संपादकीय ...09
- जन सेवा ...10
- कौशल विकास ...12
- अमृत महोत्सव ...14
- शुभारंभ ...16
- लोकल के लिए वोकल ...17
- उपलब्धियाँ ...18
- प्रतिभागिता ...19
- समारोह ...20
- राजभाषा ...23
- साक्षात्कार ...26

तकनीकी लेख
- वर्तमान प्रौद्योगिकियों का उपयोग करते हुए बुलेट प्रतिरोधी उत्पादों का विकास ...28

स्वास्थ्य लेख
- कोविड -19 संकट के दौरान आत्मरक्षा हेतु प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के आयुर्वेदिक उपाय ...30

शिक्षानीति-लेख
- नई शिक्षा नीति 2020 : शिक्षा क्षेत्र में एक बहुआयामी बदलाव ...32
- नई शिक्षा नीति 2020 सिर्फ कागजी खानापूर्ति न हो ...35

लोक कथा
- जिंदगी का दूसरा नाम ही संघर्ष है ...37

पुस्तक परिचय
- प्राचीन भारत में खेल-कूद ...39

प्रेरक प्रसंग
- मेरी प्रेरणा के स्रोत मेरे पिताजी ...42

काव्यकुंज
- हुसैन सागर ...34
- फागुन मास बड़ा शरारती ...38
- प्यार क्या है! ...44
- मासूम सा बच्चा ...52

सतर्कता-लेख
- ईमानदारी का जीवन ...52

चित्र-दीर्घा
- हिंदी कार्यशालाओं की झलकियाँ ...25
- हिंदी दिवस समारोह के सांस्कृतिक कार्यक्रम ...45
- हिंदी प्रतियोगिताओं के विजेताओं को सम्मान ...46
- हिंदी में कार्यालय के कामकाज के लिए प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत कर्मचारियों को सम्मान ...48
- हिंदी प्रतियोगिताओं के निर्णायकों को सम्मान ...51

अमित शाह
गृह और सहकारिता मंत्री
भारत सरकार
AMIT SHAH
HOME AND COOPERATION MINISTER
GOVERNMENT OF INDIA

सत्यमेव जयते

प्यारे देशवासियो !

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं ।

भाषा मनोभाव व्यक्त करने का सबसे सशक्त माध्यम है। किसी भी देश का समग्र विकास तभी संभव है जब उसके निवासी अपनी मातृभाषा में चिंतन एवं लेखन करें। मातृभाषा ही ज्ञान और अभिव्यक्ति का सबसे अच्छा माध्यम है। भारत जैसे सांस्कृतिक रूप से समृद्ध देश के प्राचीन ज्ञान में ही आज के युग के अनेक जटिल प्रश्नों के उत्तर छुपे हैं और 21वीं सदी के भारत के विकास में इस ज्ञान का एक महत्वपूर्ण स्थान है। इस ज्ञान का उचित दोहन मातृभाषा के विकास के बिना संभव नहीं है। मातृभाषा में वह क्षमता है जो ज्ञान, गौरव और स्वाभिमान भी प्रदान करती है।

आधुनिक हिंदी साहित्य के पितामह कहे जाने वाले भारतेंदु हरिश्चंद्र जी ने कहा है:

"मातृभाषा की उन्नति के बिना किसी भी समाज की तरक्की संभव नहीं है तथा अपनी भाषा के ज्ञान के बिना मन की पीड़ा को दूर करना असंभव है।"

हिंदी का उद्भव एवं विकास भारत की क्षेत्रीय भाषाओं के साथ हुआ है। मूलत: इन सभी भाषाओं में भारतीय संस्कृति की मिट्टी की खुशबू आती है। यह आवश्यक है कि क्षेत्रीय भाषाओं का संरक्षण, संवर्धन और विकास किया जाए तथा अनुवाद के माध्यम से इनके बीच एक सेतु बनाया जाए ताकि भारतीय साहित्य समृद्ध हो सके। इससे भारतीय भाषाओं में आपसी सामंजस्य, सहिष्णुता, सम्मान और सौहार्द भी बढ़ेगा तथा हमें एक-दूसरे का साहित्य पढ़ने का अवसर भी मिलेगा एवं देश की भाषाई एवं राष्ट्रीय एकता और मजबूत होगी। देश की सभी भाषाओं की आपसी सहभागिता, उनका स्वतंत्र विकास और संपर्क भाषा के रूप में हिंदी का प्रयोग देश में शान्ति, परस्पर सद्भावना एवं प्रगति का मुख्य आधार बन सकता है। तिरुवल्लूवर और सुब्रमण्यम भारती जैसे तमिल के महान कवियों की साहित्यिक रचनाएं कालजयी हैं, जिन पर सभी देशवासियो को गौरव है।

इसी प्रकार बांग्ला के रवींद्रनाथ टैगोर हों, शरतचंद्र हों या महाश्वेता देवी अथवा पंजाब की अमृता प्रीतम, हम इनका साहित्य भी उसी प्रकार हिंदी में पढ़ते हैं, जिस प्रकार हम हिंदी के प्रेमचंद का साहित्य पढ़ते हैं। वास्तव में, हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाएं हमें विरासत में मिली हैं तथा इस धरोहर की रक्षा एवं संवर्धन करना हमारा महत्वपूर्ण दायित्व भी है और वर्तमान सरकार इसी दिशा में प्रतिबद्ध है। दशकों के बाद देश के माननीय प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में एक 'नई शिक्षा नीति' हमें मिली है, जिसका उद्देश्य मातृभाषा में शिक्षा उपलब्ध कराना तथा सभी भारतीय भाषाओं को पल्लवित और पुष्पित करना है।

विभिन्न भाषाएं और संस्कृतियां भारत की पहचान हैं, सभी भाषाओं का समृद्ध इतिहास है, समृद्ध साहित्य है और बड़ी संख्या में बोलने वाले भी मौजूद हैं किंतु पूरे राष्ट्र को एकसूत्र में पिरोने का काम हिंदी ने बखूबी किया है। देश की आजादी की लड़ाई में पूरब से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक स्वतंत्रता सेनानियों को एक करने का काम उस जमाने में हिंदी भाषा ने किया था। इस कार्य में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण थी, उन्होंने कहा था,

"जो भाषा भारत के दिलों पर राज करती है, वह भाषा हिंदी है।"

भाइयों, बहनों ! वैज्ञानिकों ने माना है कि हिंदी एक वैज्ञानिक भाषा है, हिंदी में उच्चारित होने वाली ध्वनियों को व्यक्त करना अत्यंत सरल है। हिंदी में जैसा बोला जाता है, वैसे ही लिखा जाता है और हिंदी की इन्हीं विशेषताओं और लोकप्रियता को ध्यान में रखते हुए भारतीय संविधान सभा ने गंभीर विचार-विमर्श के बाद आपसी सहमति से हिंदी को भारत संघ की राजभाषा का दर्जा दिया तथा हिंदी संबंधित संवैधानिक प्रावधानों को आज के ही दिन यानि 14 सितंबर 1949 को अंगीकार किया। इसी उपलक्ष में हम प्रत्येक वर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस के रूप में मनाते हैं।

प्यारे देशवासियो! जैसा कि आप जानते हैं कोरोना के कारण भारत ही नहीं अपितु पूरी दुनिया में गंभीर संकट आ गया और सभी देशों ने इस समस्या से निदान पाने के लिए हर संभव प्रयास किए। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत में कोरोना की लड़ाई अत्यंत सफलतापूर्वक लड़ी गई। इस लड़ाई में सभी राज्य सरकारों और भारत की 130 करोड़ की जनता ने भी बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।

श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में इस लड़ाई से लड़ने में हमें अनेक विकसित देशों से बेहतर सफलता मिली और यदि जनसंख्या के अनुपात से देखें तो हम पूरी दुनिया में सबसे कम मृत्यु दर के साथ महामारी से हुई हानि को कम रखने में सफल हुए हैं। इस लड़ाई में माननीय प्रधानमंत्री जी ने देश की जनता के हौसले को बढ़ाने के लिए समय-समय पर जनता की भाषा में ही राष्ट्र को संबोधित किया ताकि देश के अधिक से अधिक लोगों तक प्रभावी ढंग से बात पहुंच सके।

कोरोना काल की विषम परिस्थितियों में राजभाषा संबंधी संवैधानिक दायित्वों के निर्वहन में राजभाषा विभाग ने केंद्र सरकार के कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग सुनिश्चित किया। माननीय प्रधानमंत्री जी के आत्मनिर्भर भारत और स्वदेशी के आह्वान से प्रेरित होकर राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय ने स्मृति आधारित कंप्यूटर सॉफ्टवेयर स्वदेशी टूल 'कंठस्थ' को अधिक लोकप्रिय बनाया। विभिन्न सरकारी संगठनों के हिंदी अधिकारियों को ई-प्रशिक्षण देकर प्रोत्साहित भी किया है। इसी प्रकार स्वयं हिंदी भाषा सीखने के लिए बनाए गए 'लीला हिंदी ऐप',- *लर्निंग इंडियन लैंग्वेजेज थ्रू आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस* का भी प्रचार किया जा रहा है। इस ऐप के माध्यम से अंग्रेजी के अलावा 14 अन्य भारतीय भाषाओं, तमिल, तेलुगू, कन्नड़, मलयालम, बांग्ला, असमिया, मणिपुरी, मराठी, उड़िया, पंजाबी, नेपाली, कश्मीरी, गुजराती एवं बोडो से स्वयं हिंदी सीखी जा सकती है।

कोरोना महामारी में भी राजभाषा संबंधी कर्तव्यों को ध्यान में रखते हुए राजभाषा विभाग ने केंद्र सरकार के विभिन्न कार्यालयों/ विभागों/ उपक्रमों आदि के द्वारा प्रकाशित की जाने वाली गृह पत्रिकाओं के लिए ई-पत्रिका पुस्तकालय प्लेटफार्म उपलब्ध कराया, जिसके माध्यम से देश-विदेश में कहीं भी बैठकर केंद्र सरकार के संस्थानों की गृह-पत्रिकाओं को पढ़कर उसका लाभ उठाया जा सकता है। वर्तमान में राजभाषा विभाग ने इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों से बैठकें एवं निरीक्षण कर राजभाषा संवर्धन में एक नई पहल की है। ई-महाशब्दकोश मोबाइल ऐप' तथा 'ई-सरल हिंदी वाक्यकोश मोबाइल ऐप' भी उपलब्ध कराए हैं, इनके प्रयोग से अधिकारियों को हिंदी में टिप्पणी लिखने में बहुत सुविधा हो रही है।

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय की सुविचारित नीति है कि केंद्र सरकार के कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग प्रेरणा, प्रोत्साहन व सद्भावना से बढ़ाया जाए। माननीय प्रधानमंत्री जी के स्मृति विज्ञान संबंधी प्रेम और प्रयोग से प्रभावित होकर राजभाषा विभाग ने हिंदी के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए बारह 'प्र' की रूपरेखा और रणनीति पर काम करना शुरू किया है, जिसमें महत्वपूर्ण स्तंभ हैं: प्रेरणा, प्रोत्साहन, प्रेम, पुरस्कार, प्रशिक्षण, प्रयोग, प्रचार, प्रसार, प्रबंधन, प्रोन्नति, प्रतिबद्धता और प्रयास। राजभाषा विभाग द्वारा विभिन्न बैठकों में संबंधित कार्यालय के शीर्ष नेतृत्व को इन्हीं बारह 'प्र' की रणनीति के अनुसार कार्यालय के अधिक से अधिक कार्य को मूल रूप से सरल एवं सहज हिंदी में करने के लिए प्रेरित किया जाता है।

हम सभी जानते हैं कि भारत के माननीय प्रधानमंत्री जी स्वयं हिंदी और भारतीय भाषाओं के प्रति अनुराग रखते हैं। माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा संयुक्त राष्ट्र महासभा में हिंदी में दिए गए ओजस्वी संबोधन तथा देश-विदेश में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों में प्रधानमंत्री जी द्वारा हिंदी में किए गए संबोधन से सिर्फ देश ही नहीं बल्कि विदेश में

रहने वाले भारतीयों को भी बहुत गर्व होता है। प्रधानमंत्री जी द्वारा भारत की विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं में स्थानीय लोगों को संबोधित करने का प्रयास भी क्षेत्रीय भाषाओं के प्रति सम्मान व्यक्त करने का एक सराहनीय और अनुकरणीय कदम है।

मुझे लगता है कि, जब हम आजादी के 75वें वर्ष में, अमृत पर्व में, प्रवेश कर रहे हैं, तो हमें इस वर्ष राष्ट्रकार्यों को हाथ में लेना चाहिए। महात्मा गांधी जी ने राजभाषा को राष्ट्रीयता के साथ जोड़ा था। हमारे आजादी के आंदोलन के तीन स्तंभ थे, स्वभाषा, स्वदेशी और स्वराज। स्वराज की कल्पना, स्वदेशी के संस्कार से उत्पन्न हुई स्वभाषा। आजादी के आंदोलन की यदि कोई सशक्त नींव थी, तो वह स्वभाषा ही थी। इस स्वभाषा से स्वदेशी के संस्कार ने जन्म लिया, स्वराज की कल्पना मिली, जिसने 15 अगस्त 1947 को आजादी दिलाई। इस आजादी के आंदोलन में हमारी स्वभाषाओं में राजभाषा और स्थानीय भाषाओं की भूमिका पर जो अलग-अलग साहित्य की रचनाएँ हुई हैं, इसका एक संग्रह कर देश के सामने रखना चाहिए ताकि नई पीढ़ी को स्वभाषा का महत्व पता चल सके।

दूसरा विषय जो मेरे मन में है, क्षेत्रीय इतिहास को राजभाषा में ढंग से अनुवादित करना चाहिए। विभिन्न क्षेत्रों की गौरवशाली संस्कृति और उन क्षेत्रों के महानायकों के इतिहास का राजभाषा में सही भाव के साथ अनुवाद होना चाहिए और ये अनुवादित ग्रंथ देश के विभिन्न ग्रंथालयों में उपलब्ध भी होने चाहिए। मैं मानता हूं कि आजादी के 75वें साल में मनाए जा रहे अमृत महोत्सव पर राष्ट्र की एकता और अखंडता के लिए हमारा बहुत बड़ा काम होगा।

संविधान द्वारा दिए गए राजभाषा संबंधी दायित्वों के निर्वहन की दिशा में माननीय प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में सरकारी काम-काज मूल रूप से हिंदी में किया जा रहा है। गृह मंत्रालय में सभी फाइलें हिंदी में प्रस्तुत की जाती हैं, क्योंकि मेरा मानना है कि हिंदी में कार्य कर हम अपने संवैधानिक दायित्व का निर्वहन तो कर ही रहे हैं, आम-जन तक सरकार की नीतियों और कार्यक्रमों की जानकारी आम जनता की भाषा में देने का महत्वपूर्ण काम भी इसके साथ ही होता है।

आइए! हिंदी दिवस के इस पावन पर्व पर हम प्रतिज्ञा लें कि हम अपने राष्ट्रीय कर्तव्यों का पूर्ण रूप से पालन करेंगे और अधिक से अधिक मूल कार्य हिंदी में कर संवैधानिक दायित्वों का निर्वहन करेंगे।

हिंदी दिवस के अवसर पर सभी देशवासियो को पुन: हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं, वंदे मातरम !

नई दिल्ली,
14 सितंबर, 2021

(अमित शाह)

आज़ादी का अमृत महोत्सव

- राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय की वेबसाइट से साभार

राजनाथ सिंह
रक्षा मंत्री
भारत सरकार
RAJNATH SINGH
MINISTRY OF DEFENCE
GOVERMENT OF INDIA

सत्यमेव जयते

संदेश

जैसा कि विदित है, हमारे संविधान निर्माताओं ने 14 सितंबर, 1949 को देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली हिंदी को भारत संघ की राजभाषा का दर्जा प्रदान किया। तब से प्रतिवर्ष 14 सितंबर का दिन 'हिंदी दिवस' के रूप में मनाया जाता है।

उल्लेखनीय है कि 15 अगस्त, 2021 को आजादी की 75वीं वर्षगांठ के अवसर पर आजादी का अमृत महोत्सव पूरे देश में जन-भागीदारी के माध्यम से मनाया जा रहा है। यह महोत्सव भारत सरकार द्वारा मनाए जाने वाले कार्यक्रमों की एक श्रृंखला है जो कि दिनांक 12 मार्च, 2021 से प्रारम्भ हो चुकी है और 15 अगस्त, 2023 तक अलग-अलग कार्यक्रमों और समारोहों के माध्यम से पूरे देश में विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। इस अमृत महोत्सव के पावन अवसर पर हिंदी दिवस का महत्व और भी अधिक बढ़ जाता है।

भारत विविधताओं वाला देश है। हमारे देश में अनेक भाषाएं बोली जाती हैं। तथापि, अपनी सरलता, सुबोधता और पहुंच के कारण हिंदी ने भारत की राजभाषा बनने का गौरव प्राप्त किया। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान और इसके बाद हिंदी ने हमारे राष्ट्र को एकता के सूत्र में पिरोया है तथा विविधता में एकता की भावना को मजबूत बनाए रखा है।

हिंदी भारत की सबसे अधिक बोली और समझी जाने वाली भाषा है। आत्मनिर्भर भारत को लेकर सरकार द्वारा चलाई जाने वाली योजनाओं और कार्यक्रमों के लाभों के बारे में जनता को उनकी भाषा में अधिक प्रभावी ढंग से जानकारी दी जा सकती है।

मुझे यह जानकर हर्ष हो रहा है कि इस वर्ष भी रक्षा मंत्रालय, सैन्य-कार्य विभाग एवं अन्य सभी रक्षा अंतर-सेवा संगठनों में हिंदी पखवाड़े का आयोजन मानक दिशा-निर्देशों का पालन करते हुए किया जा रहा है। मैं, रक्षा मंत्रालय, सैन्य कार्य विभाग एवं सभी रक्षा अंतर-सेवा संगठनों के देश भर में फैले विभिन्न कार्यालयों में कार्यरत अधिकारियों/कर्मचारियों से अपील करता हूं कि वे अपना अधिक-से-अधिक सरकारी काम-काज राजभाषा हिंदी में करते हुए संवैधानिक अपेक्षा का अनुपालन सुनिश्चित करें।

"जय हिन्द"

(राजनाथ सिंह)

स्थान: नई दिल्ली
दिनांक: 03 सितंबर, 2021

- रक्षा मंत्रालय की वेबसाइट से साभार

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक की कलम से....

डॉ. संजय कुमार झा
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक
मिश्र धातु निगम लिमिटेड
रक्षा मंत्रालय, भारत सरकार

नमस्कार मित्रो,

किसी भी राष्ट्र के लिए अपनी भाषा में कामकाज करना गर्व का विषय होता है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात सरकारी कामकाज को सुचारू रूप से चलाने के लिए संविधान सभा द्वारा देश में सबसे अधिक बोली-समझी जाने वाली भाषा हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया। सात दशकों से अधिक समय से हम हिंदी के साथ-साथ अंग्रेजी का प्रयोग अपने कार्यालयी कामकाज में करते आ रहे हैं। आज जब हम आत्मनिर्भर भारत की बात करते हैं तो इसमें राजभाषा के स्तर पर आत्मनिर्भरता की बात भी की जानी चाहिए। हमें इस विषय पर गहन विचार-मंथन करने की आवश्यकता है। हम राजभाषा के रूप में आत्मनिर्भर बनने के लिए कदम तो बढ़ा चुके हैं किंतु मंजिल अभी दूर है। हमें अपनी मंजिल पर पहुँचने के लिए अपने दैनिक कार्यालयी कामकाज में हिंदी के प्रयोग की शत-प्रतिशतता सुनिश्चित करनी होगी।

मिधानि में राजभाषा कार्यान्वयन के लिए निर्धारित किए गए सभी लक्ष्यों को लगभग प्राप्त किया गया है। अब मिधानि का लक्ष्य है कि यहाँ शत-प्रतिशत कामकाज हिंदी में हो। हमने अपने कर्मचारियों को हिंदी में कामकाज करने हेतु प्रोत्साहित करने के लिए विभिन्न योजनाएँ शुरु की हैं। हमारे कर्मचारी इन योजनाओं का लाभ उठाते हुए राजभाषा कार्यान्वयन को गति प्रदान करने के लिए अपना अमूल्य योगदान दे रहे हैं।

राजभाषा प्रचार-प्रसार की इसी कड़ी में हम मिधानि की छमाही ई-गृह पत्रिका 'संकल्प' का नवीनतम अंक प्रकाशित कर रहे हैं। पत्रिका का संपादन सुंदर हुआ है। संपादक मंड़ल और सभी लेखकों को बहुत-बहुत शुभकामनाएँ। मुझे विश्वास है कि पत्रिका में प्रकाशित लेखों से सभी कर्मचारी लाभान्वित होंगे।

संजय कुमार झा

डॉ. संजय कुमार झा

निदेशक वित्त की कलम से....

एन गौरी शंकर राव
निदेशक (वित्त)
मिश्र धातु निगम लिमिटेड
रक्षा मंत्रालय, भारत सरकार

नमस्कार मित्रो,

भाषा पारस्परिक संवाद का एक माध्यम होने के साथ-साथ कार्यालयी गतिविधियों को सुचारू रूप से चलाने का भी माध्यम है। भारत संघ ने देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली हिंदी को राजभाषा के रूप में अपनाया है। हिंदी अपनी वैज्ञानिकता और सुग्राहयता के कारण उन सभी मानकों पर खरा उतरती है जो किसी भाषा को राजभाषा के रूप में अपनाने के लिए आवश्यक होते हैं। किसी भाषा का विकास उसका प्रयोग करने वाली जनसंख्या पर निर्भर होता है। मौखिक व्यवहार में प्रयोग की जाने वाली भाषा के रूप में हिंदी एक विकसित और समृद्ध भाषा है लेकिन राजभाषा के रूप में हिंदी अभी भी विकास की ओर अग्रसर है। हिंदी को राजभाषा के रूप में विकसित करने के लिए आवश्यक है कि रोजगारपरक विषयों की शिक्षा का माध्यम हिंदी हो, तभी शिक्षण संस्थानों से शिक्षा ग्रहण कर निकलने वाली युवा पीढ़ी हिंदी में कामकाज के प्रति स्वयं को अनुकूल पाएगी।

मिधानि में हम अपने कर्मचारियों को हिंदी में कामकाज के लिए प्रोत्साहित करते हैं। इसके लिए विभिन्न पुरस्कार योजनाओं को शुरु किया गया है, जैसे हिंदी पुस्तक लेखन योजना, कार्यालयी कामकाज हिंदी में करने के लिए नकद पुरस्कार योजना आदि। इस वर्ष हमने 46 कर्मचारियों को हिंदी में कार्यालयी कामकाज करने के लिए पुरस्कृत किया है। साथ ही, कर्मचारियों में हिंदी का प्रयोग करने में होने वाली झिझक को दूर करने के लिए हम मासिक हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन कर रहे हैं।

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि हम मिधानि की छमाही गृह पत्रिका 'संकल्प' का नवीनतम अंक प्रकाशित करने जा रहे हैं। 'संकल्प' का प्रकाशन हमारे कर्मचारियों के हिंदी के प्रति उनके समर्पण का एक उदाहरण है। अपनी रचनाओं से पत्रिका को समृद्ध करने वाले सभी लेखकों और पत्रिका को इतना सुंदर बनाने के लिए संपादक मंड़ल को हार्दिक शुभकामनाएँ।

गौरीशंकर

एन. गौरी शंकर राव

महाप्रबंधक (मानव संसाधन) की कलम से....

ए रामकृष्ण राव
महाप्रबंधक (मानव संसाधन)
मिश्र धातु निगम लिमिटेड
रक्षा मंत्रालय, भारत सरकार

नमस्कार मित्रो,

राजभाषा हिंदी का प्रचार-प्रसार हमारा नैतिक एवं संवैधानिक दायित्व है। यह हम सभी की जिम्मेदारी है कि अपने सामूहिक प्रयासों से कार्यालयी कामकाज में हिंदी के प्रयोग के प्रति अनुराग उत्पन्न करें और उसका समुचित प्रचार-प्रसार करें। हमें अपने कर्मचारियों के अंदर इस भावना का विकास करना है कि हमें सिर्फ निर्धारित लक्ष्यों तक ही हिंदी में कामकाज को सीमित नहीं करना है बल्कि शत-प्रतिशत हिंदी में कामकाज हमारा लक्ष्य होना चाहिए।

राजभाषा में कार्यालयी कामकाज करने के लिए मिधानि में कर्मचारियों को प्रशिक्षित करने हेतु हिंदी भाषा प्रशिक्षण नियमित रूप से संचालित किया जा रहा है। जिसके परिणामस्वरुप मिधानि में हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान रखने वाले कर्मचारियों की संख्या 80% से अधिक हो गई है। मुझे आप सबको यह बताते हुए अपार हर्ष हो रहा है कि इसी आधार पर हम अपने कार्यालय को राजभाषा नियम, 1976 के नियम 10(4) के अंतर्गत भारत के गजट में अधिसूचित करा रहे हैं। भारत के गजट में अधिसूचित होने के उपरांत राजभाषा कार्यान्वयन के प्रति हम सभी की जिम्मेदारियाँ और भी बढ़ जाएगी।

उद्यम का राजभाषा प्रभारी होने के नाते मैं आप सभी से अपील करता हूँ कि चूंकि अब हम भारत के गजट में अधिसूचित होने जा रहे हैं तो राजभाषा कार्यान्वयन के अपने योगदान में वृद्धि करें और अपने सहकर्मियों को भी इसके लिए प्रोत्साहित करें। सामूहिक प्रयास से ही राजभाषा हिंदी का सर्वांगीण विकास संभव है।

हम मिधानि की छमाही गृह पत्रिका 'संकल्प' का नवीनतम अंक प्रकाशित करने जा रहे हैं। आप इस अंक को पढ़कर अपना ज्ञानवर्धन करें और अपनी प्रतिक्रियाओं से हमें अवश्य अवगत कराएं। आपकी प्रतिक्रियाओं से हम पत्रिका के आगामी अंकों को और बेहतर बनाने में सक्षम होंगे। पत्रिका के संपादक मंड़ल और सभी लेखकों को बहुत-बहुत शुभकामनाएँ।

जय हिंद! जय हिंदी!!

ए. रामकृष्ण राव

सकारात्मकता से भरपूर संकल्प

डॉ. बी. बालाजी
उप प्रबंधक (हिंदी अनुभाग एवं निगम संचार)

भारत में केंद्र सरकार के कार्यालयों में प्रति वर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस मनाने की प्रथा है। 1953 से यह क्रम चला आ रहा है। इस अवसर पर हिंदी के प्रचार-प्रसार की चर्चा होती है। संकल्प लिए जाते हैं कि हिंदी को राजभाषा के रूप में स्थापित करने का पूरा प्रयास करेंगे। सकारात्मकता से भरपूर संकल्प। केंद्र सरकार के कार्यालयों में हिंदी को राजभाषा का दर्जा दिलाने के लिए हिंदी अनुभागों के कर्मचारी पूरी तरह कटिबद्ध हैं। यह कटिबद्धता अन्य विभाग के कर्मचारियों में भी अब दिखाई दे रही है। इसी का परिणाम है कि कार्यालयों में हिंदी में काम करने की प्रथा बनने लगी है। क्रम चल पड़ा है। अपेक्षा की जाती है कि इस क्रम को गति मिलेगी, इसकी तीव्रता बढ़ेगी। संकल्प की श्रीवृद्धि होगी। कार्यालयीन कामकाज में अनुवाद पर निर्भरता कम होगी। सहजता के साथ हिंदी में कामकाज होने लगेगा।

हिंदी में काम करने-करवाने के संकल्पों का ही परिणाम है कि मिधानि जैसे बहुत से उपक्रमों में कार्यालय का कामकाज हिंदी में करने की रूचि बढ़ी है। उदाहरण के लिए हैदराबाद-सिकंदराबाद में स्थित उपक्रमों की नगर राजभाषा कार्यान्वन समिति (नराकास) में 47 छोटे-बड़े उपक्रम शामिल हैं। इन सभी कार्यालयों में हिंदी में कामकाज को गति मिली है। इस आधार पर यह सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है कि वर्तमान में भारत भर में सक्रिय 524 नराकासों (राजभाषा विभाग की वेबसाइट के अनुसार) के सभी सदस्य कार्यालयों द्वारा अपने-अपने कार्यालयों में हिंदी के प्रगामी प्रयोग पर विशेष ध्यान देकर निर्धारित लक्ष्यों को हासिल किया जा रहा है।

मिधानि की स्थापना के भी 48 वर्ष पूरे हो रहे हैं। इतने वर्षों में हिंदी में कार्यसाधक ज्ञान रखने वाले कर्मचारियों की संख्या में वृद्धि हुई है। अपनी कंपनी में 80 प्रतिशत से अधिक कर्मचारी हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान हासिल कर चुके हैं। कार्यालय को भारत के गजट में अधिसूचित करने की प्रक्रिया जारी है। प्रसन्नता का विषय है कि कार्यालय में हिंदी में काम करने वाले कर्मचारियों की संख्या बढ़ रही है। हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में हिंदी में कामकाज करने वाले कर्मचारियों को सम्मानित किया गया है। उनसे आग्रह है कि वे अपना कामकाज हिंदी में करने की निरंतरता बनाए रखें और अपने अन्य साथियों को इसके लिए प्रेरित करते रहें।

संकल्प के इस अंक में कंपनी की विभिन्न गतिविधियों के समाचार और विभिन्न विषयों पर हिंदी में लेख दिए जा रहे हैं। इन लेखों से भी कर्मचारियों के हिंदी लेखन का सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है। सभी लेखकों को हिंदी में सामग्री उपलब्ध कराने के लिए धन्यवाद। कर्मचारियों से निवेदन है कि पत्रिका जरूर पढ़ें। आशा है कि आप सब को यह अंक पसंद आएगा। अपनी प्रतिक्रियाओं से हमें अवश्य अवगत कराएँ और हिंदी में नियमित लिखते रहें। अस्तु।

डॉ. बी. बालाजी

पीपीएचसी की आधारशिला

डॉ. एस. के. झा, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, मिधानि ने 03 जून, 2021 को श्री एन. गौरी शंकर राव, निदेशक (वित्त), वरिष्ठ अधिकारियों व कर्मचारियों के प्रतिनिधियों की गरिमामयी उपस्थिति में "सार्वजनिक प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र (पीपीएचसी)" की आधारशिला रखी। मिधानि ने स्वास्थ्य की प्रोन्नति के लिए सीएसआर के अंतर्गत "मिधानि सार्वजनिक प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल केंद्र" नामक सुविधा स्थापित करने की परिकल्पना की है। इस केंद्र को मिधानि और उसके आसपास रहने वाले गरीब परिवारों के लिए अत्यंत मामूली शुल्क पर चिकित्सा सेवाएँ प्रदान करने के उद्देश्य से संचालित किया जाएगा। इस केंद्र में बुनियादी रक्त परीक्षण, बाहय रोगी उपचार आदि की सुविधाएँ उपलब्ध होंगी। यहाँ डॉक्टरी परामर्श, जाँच और दवाइयाँ जैसी सेवाएँ भी दी जाएँगी।

जलाऊ लकड़ी का दान

श्री एन. गौरी शंकर राव, निदेशक (वित्त), मिधानि ने 11 जून, 2021 को अज्ञात लावारिस शवों का अंतिम संस्कार करने के लिए सत्य हरिश्चंद्र फाउंडेशन निराश्रित कल्याण केंद्र, हैदराबाद को 50 टन जलाऊ लकड़ी / अप्रयुक्त पैकिंग लकड़ी से भरा वाहन सौंपा। सत्य हरिश्चंद्र फाउंडेशन (अज्ञात-लावारिस-लापता ब्यूरो), निराश्रित कल्याण केंद्र, हैदराबाद ने अज्ञात लावारिस शवों के अंतिम संस्कार के लिए जलाऊ लकड़ी दान करने के लिए मिश्र धातु निगम लिमिटेड (मिधानि) के प्रति आभार व्यक्त किया। ब्यूरो ने कहा कि "हमारी सहायता करने के लिए हम आपकी नेक पहल की सराहना करते हैं। आपकी नेक पहल ने साबित कर दिया कि मिश्र धातु निगम लिमिटेड टीम हमेशा समाज की मदद के लिए आगे आती है।" धन्यवाद स्वरूप ब्यूरो के अधिकारियों ने 19 जून, 2021 को डॉ. एस. के. झा, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, मिधानि और श्री एस. नरसिंग राव, अपर महाप्रबंधक (प्रशासन) को सम्मानित किया।

श्री एन. गौरी शंकर राव, निदेशक (वित्त) दान पत्र सौंपते हुए

डॉ.संजय कुमार झा, सीएमडी, मिधानि ब्यूरो के अधिकारियों से सम्मान ग्रहण करते हुए

कोविड टीकाकरण अभियान

डॉ. एस. के. झा, सीएमडी, टीकाकरण अभियान का उद्घाटन करते हुए

डॉ.एस.के. झा, सीएमडी, मिधानि ने अपने कर्मचारियों, उनके जीवनसाथी, अनुबंध कर्मचारियों, अनियमित कर्मचारियों, सेवानिवृत्त कर्मचारियों, उनके आश्रितों और आसपास के क्षेत्रों के निवासियों के लिए आयोजित "कोविड टीकाकरण अभियान" का उद्घाटन किया। यह अभियान दो चरणों में आयोजित किया गया था। पहला और दूसरा अभियान क्रमशः 18 से 22 जून 2021 तक अपोलो डीआरडीओ, हैदराबाद और तेलंगाना राज्य सरकार के समन्वय में आयोजित किया गया था।

डॉ. अमृता लक्ष्मी, एसपीएचओ, तेलंगाना सरकार इस अवसर पर उपस्थित रही। इस अवसर पर श्री ए. रामकृष्ण राव, महाप्रबंधक (मानव संसाधन), श्री एस. नरसिंग राव, अपर महाप्रबंधक, प्रशासन, श्री एनएस रेड्डी, अध्यक्ष, एमडब्ल्यू एवं एसयू, डॉ. पी. वीरा राजू, मुख्य चिकित्सा अधिकारी, डॉ. जी.आर. प्रवीण ज्योति, प्रबंधक (एफएसी), श्री एमपी रमेश, उप महाप्रबंधक, मानव संसाधन-ईएमएस एवं कैंटीन, डॉ कृष्ण मोहन, अतिथि चिकित्सक, एफएसी, टाउनशिप और मिधानि के अन्य अधिकारी भी उपस्थित थे।

अक्षय पात्र फाउंडेशन को वाहन प्रायोजित

डॉ. एस. के. झा, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, मिधानि ने श्री एन गौरी शंकर राव, निदेशक (वित्त), डॉ. उपेंद्र वेन्नम, आईपीओएस, मुख्य सतर्कता अधिकारी-मिधानि, श्री ए रामकृष्ण राव, महाप्रबंधक (मानव संसाधन) की उपस्थिति में अक्षय पात्र फाउंडेशन को नैगम सामाजिक उत्तरदायित्व के तहत मिधानि द्वारा प्रायोजित वाहन का उद्घाटन किया। अक्षय पात्र फाउंडेशन टीम श्री यज्ञेश्वर प्रभु, उपाध्यक्ष-हैदराबाद अक्षयपात्र चैप्टर, सुश्री रजनी सिन्हा, राज्य प्रमुख, श्री अविनाश आलम, वरिष्ठ प्रबंधक ने तेलंगाना राज्य के सरकारी स्कूल के बच्चों को पौष्टिक भोजन खिलाने में मिधानि के समर्पित समर्थन के लिए आभार

डॉ. एस. के. झा, सीएमडी, श्री एन. गौरी शंकर राव, निदेशक (वित्त), डॉ. उपेंदर वेन्नम, मु.स.अ. तथा श्री ए.रामकृष्ण राव, म.प्र., मा.संसा. झंडी दिखाकर वाहन रवाना करते हुए

व्यक्त किया है। उक्त वाहन एक कस्टम-डिज़ाइन किया गया वाहन है जिसकी कीमत 17 लाख रुपये है, जो स्कूलों में भोजन पहुँचाने और कोविड फीडिंग गतिविधियों को करने के लिए भी है। उद्घाटन समारोह का आयोजन सीएसआर टीम, सुश्री ए. आर. रश्मि, प्रबंधक, मानव संसाधन और श्री एम. वेणुगोपाल स्वामी, वरिष्ठ कार्यपालक द्वारा किया गया था।

निपुण 2021-ड्राइविंग द ड्राइवर्स

श्री एन. गौरी शंकर राव, निदेशक (वित्त) ने 08 अगस्त 2021 को "भारत की आजादी का अमृत महोत्सव" के उपलक्ष्य में "आत्मनिर्भर भारत अभियान" के तहत मिधानि द्वारा आयोजित एक अद्वितीय कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम "निपुण 2021-ड्राइविंग द ड्राइवर्स" का शुभारंभ और इसके प्रतिभागियों को संबोधित किया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में 75 से अधिक ड्राइवरों ने भाग लिया। प्रशिक्षण कार्यक्रम की समग्र संरचना और उद्देश्य जानबूझकर टैग लाइन: संरक्षा, जागरूकता, कर्तव्य और जिम्मेदारियाँ के साथ डिजाइन किया गया था, जो ड्राइवरों को अपने दैनिक कर्तव्यों को पूरा करने में उनके कौशल और विशेषज्ञता क्षेत्र को बढ़ाने में मदद करेगा। मैसर्स ऑटोमोबाइल सर्विस प्रोवाइडर एकेडमी (एएसपीए) के समन्वय से एक दिवसीय कार्यशाला के साथ प्रशिक्षण मॉड्यूल की रूपरेखा तैयार की गई।

कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम "निपुण 2021-ड्राइविंग द ड्राइवर्स" के प्रतिभागी व आयोजक

श्री एस. नरसिंग राव, अपर महाप्रबंधक (प्रशासन) एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम संयोजक, डॉ. श्रीनिवास पुप्पला, उप परिवहन आयुक्त, आदिलाबाद जिला, डीटीओ, तेलंगाना सरकार और श्री विक्रांत मोहन, संस्थापक और अध्यक्ष, एएसपीए इस कार्यक्रम में उपस्थित रहे और सभी प्रतिभागियों को बधाई दी तथा अद्वितीय कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए मिधानि प्रशिक्षण एवं विकास विभाग टीम की सराहना की। श्री पी सुनील कुमार, उप प्रबंधक (मानव संसाधन एवं प्रशासन) और श्री वी. के. सुदर्शन, उप प्रबंधक (एसपीजी) आयोजन दल के अधिकारी थे।

आईटीआई छात्रों के लिए कौशल विकास और प्रशिक्षण कार्यक्रम

श्री एन. गौरी शंकर राव, निदेशक (वित्त) प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए

श्री एन. गौरी शंकर राव, निदेशक (वित्त), मिधानि ने "भारत की आजादी का अमृत महोत्सव" के अंतर्गत आईटीआई अपरेंटिस प्रशिक्षुओं के लिए मिधानि द्वारा आयोजित "कौशल विकास और प्रशिक्षण कार्यक्रम" का उद्घाटन किया। मिधानि ने एक दिवसीय कार्यशाला के रूप में प्रशिक्षण कार्यक्रम बैच वार आयोजित करने की योजना बनाई है। यह पहला बैच था जिसके विषय आत्मविश्वास और प्रेरणा का निर्माण, सफलता के लिए बुनियादी आवश्यक / तकनीकी कौशल, व्यवहार और संप्रेषण कौशल, रोजगार कौशल, चुनौतियाँ और अवसर और सुरक्षा जागरूकता कार्यक्रम थे। श्री एस. नरसिंग राव, अपर महाप्रबंधक (प्रशासन), श्री डी. प्रवीण वर्मा, वरिष्ठ प्रबंधक (पीपीसी), श्री बी. मुरुगन, उप प्रबंधक (टीआईएस एवं एटी), श्री नागा पवन कुमार बीएचएसवी, उप प्रबंधक (मानव संसाधन) और श्री एम. मल्ला रेड्डी, उप प्रबंधक (अग्नि, संरक्षा और पर्यावरण) संकाय सदस्य थे। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान से हुआ।

संरक्षा विभाग के अधिकारी से अग्नि, संरक्षा और पर्यावरण का प्रशिक्षण ग्रहण करते आईटीआई अपरेंटिस प्रशिक्षुओं का दल

मध्य-कैरियर प्रशिक्षण कार्यक्रम : "परिवर्तन"

बाएँ से दाएँ: श्री एन. गौरी शंकर राव, निदेशक (वित्त), डॉ. एस. के. झा, सीएमडी, मध्य-कैरियर बैच 3 प्रशिक्षण का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन उद्घाटन करते हुए; डॉ. उपेंद्र वेन्नम, मुख्य सतर्कता अधिकारी, डॉ. एस. के. झा, सीएमडी, श्री एन. गौरी शंकर राव, निदेशक (वित्त) और श्री एस. नरसिंह राव, अ.म.प्र. (प्रशा.) प्रशिक्षण कार्यक्रम के लोगो "परिवर्तन" का विमोचन करते हुए

डॉ. संजय कुमार झा, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, श्री एन. गौरी शंकर राव, निदेशक (वित्त) और डॉ. उपेंद्र वेन्नम, मुख्य सतर्कता अधिकारी ने मध्य स्तर के प्रबंधन अधिकारियों के लिए मध्य-कैरियर बैच 3 प्रशिक्षण का उद्घाटन किया। इस अवसर पर गणमान्य व्यक्तियों द्वारा प्रशिक्षण थीम लोगो "परिवर्तन" का विमोचन किया गया। प्रशिक्षण का उद्देश्य रणनीति, टीम वर्क, नेतृत्व और सहयोग था। दि. 13 से 25 सितंबर 2021 तक के प्रशिक्षण कार्यक्रम का 24.09.2021 को समापन समारोह आयोजित किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. एस. के. झा, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, मिधानि और विशिष्ट अतिथि डॉ. उपेंद्र वेन्नम, आईपीओएस, मुख्य सतर्कता अधिकारी ने सभी प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र देकर सम्मानित किया। मिधानि के वरिष्ठ अधिकारियों ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई और प्रशिक्षण एवं विकास विभाग की सराहना की। कार्यक्रम के दौरान प्रतिभागियों ने प्रशिक्षण कार्यक्रम पर अपनी प्रतिक्रियाएँ प्रस्तुत कीं।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता पर वेबिनार

मिधानि ने 08.07.2021 को "आजादी का अमृत महोत्सव" के तहत इंजीनियरिंग और डिग्री कॉलेजों के छात्रों के लिए "आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मशीन लर्निंग में अपना करियर कैसे शुरू करें" विषय पर एक वेबिनार का आयोजन किया। वेबिनार के अतिथि श्री ए. रामकृष्ण राव, महाप्रबंधक (मानव संसाधन) और पी. शशिधरन, महाप्रबंधक (ईएस) ने विनिर्माण उद्योगों में कृत्रिम बुद्धिमत्ता की उपयोगिता और आवश्यकता के बारे में अपने विचार व्यक्त किए जबकि मुख्य वक्ता के. लक्ष्मी प्रसन्ना, उप प्रबंधक (सूचना प्रौद्योगिकी) ने आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के कामकाज, अनुप्रयोग और प्रशिक्षण पर विस्तार से एक सूचनात्मक व्याख्यान दिया।

आजादी का अमृत महोतस्व

मिधानि ने 9 अप्रैल'21 से 15 अप्रैल'21 के बीच भारत की आजादी के 75 साल पूरे होने के उपलक्ष्य में विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया। भारत की आजादी का अमृत महोत्सव मिधानि की सभी इकाईयों (हैदराबाद, दिल्ली, कोलकाता, रोहतक) में वर्चुअली और शारीरिक रूप से सभी कोविड -19 दिशानिर्देशों का पालन करते हुए मनाया गया। कार्यक्रम का विषय 'आत्मनिर्भर भारत' था।

मिधानि ने 9 अप्रैल 2021 को एक सप्ताह के कार्यक्रम के साथ "आज़ादी का अमृत महोत्सव" के उत्सव की शुरुआत की। उत्सव के उद्घाटन के दिन निम्नलिखित कार्यक्रम आयोजित किए गए:

क) "भारत की आजादी का अमृत महोत्सव" का उद्घाटन:
डॉ. एस. के. झा, सीएमडी ने महोत्सव का वर्चुअली उद्घाटन किया। श्री एन. गौरी शंकर राव, निदेशक (वित्त) और अन्य वरिष्ठ अधिकारी इस अवसर पर उपस्थित रहे। इस कार्यक्रम में 200 से अधिक प्रतिभागियों ने ऑनलाइन भाग लिया। अपने संबोधन में, सीएमडी ने कार्यस्थल पर कोविड -19 प्रोटोकॉल को बनाए रखने की आवश्यकता पर जोर दिया। कर्मचारियों की सुरक्षा, कार्य करने के सुरक्षित माहौल और कर्मचारियों के कौशल विकास की आवश्यकता पर भी चर्चा की गई।

डॉ. एस. के. झा, सीएमडी, महोत्सव का वर्चुअली उद्घाटन करते हुए

ख) कौशल विकास प्रशिक्षण: 150 से अधिक आईटीआई और प्रशिक्षु छात्रों ने 2 बैचों में कौशल विकास प्रशिक्षण में भाग लिया। आयोजित प्रशिक्षण सत्रों का विवरण इस प्रकार है: i) कौशल विकास सत्र ii) आत्मानिर्भर भारत पर प्रस्तुति - वर्तमान और भविष्य iii) साइबर सुरक्षा जागरूकता पर कार्यक्रम iv) संरक्षा जागरूकता पर कार्यक्रम।

ग) सामरिक अनुप्रयोगों के लिए विकसित सामग्री, महत्वपूर्ण घटक पर सत्र: युवा इंजीनियरों ने रक्षा, अंतरिक्ष और ऊर्जा क्षेत्र में आत्मानिर्भर भारत की दिशा में मिधानि के योगदान पर एक संवादात्मक सत्र में भाग लिया। सत्र सामरिक अनुप्रयोगों के लिए विकसित सामग्री, महत्वपूर्ण घटकों पर आयोजित किया गया था। सत्र में प्रतिभागियों को विभिन्न क्षेत्रों में मिधानि की भविष्य की योजनाओं के बारे में जानकारी दी गई।

10 अप्रैल को, मिधानि में श्री एन. गौरी शंकर राव, निदेशक (वित्त) और श्री डी. गोपीकृष्ण, महाप्रबंधक (उत्पादन एवं विपणन) द्वारा सुपरअलॉय के लिए हैवी ड्यूटी मशीन का उद्घाटन किया गया। यह सुविधा मिधानि की मशीनी क्षमता को बढ़ाएगी। लेफ्टिनेंट कर्नल (डॉ.) एन. शेषगिरी राव द्वारा "देशभक्ति और आत्मनिर्भरता के लिए कर्मचारियों को प्रेरित करना" विषय पर एक वार्ता का आयोजन किया गया। यह आयोजन विशेष रूप से महिला कर्मचारियों के साथ सेवानिवृत्त वरिष्ठ सैन्य अधिकारियों के व्यक्तिगत और व्यावसायिक अनुभवों को साझा करने के लिए किया गया था।

15 अप्रैल को निम्नलिखित कार्यक्रम आयोजित किए गए:

क) एमएसएमई और स्टार्ट-अप के लिए वर्चुअल संवादात्मक सत्र: श्री दासू अत्चुतराम, महाप्रबंधक (वाणिज्यिक) ने सत्र में प्रतिभागियों का स्वागत किया। मुख्य भाषण श्री एन. गौरी शंकर राव, निदेशक (वित्त) द्वारा दिया गया। कार्यक्रम के दौरान, विक्रेताओं को मिधानि की गतिविधियों, एमएसएमई/स्टार्ट-अप्स को समर्थन देने की पहल, जीईएम पंजीकरण और जीईएम पोर्टल में विक्रेता के रूप में बोलियों की भागीदारी आदि के बारे में अवगत कराया गया। विभिन्न स्थानों के लगभग 50 विक्रेताओं ने कार्यक्रम में भाग लिया। श्री रवि वर्मा, जीईएम समन्वयक, तेलंगाना क्षेत्र ने एक विक्रेता के रूप में जीईएम पंजीकरण, उत्पादों का कैटलॉग निर्माण, बोली भागीदारी, जीईएम में रिवर्स नीलामी, चालान निर्माण आदि पर एक प्रस्तुति दी। कार्यक्रम के दौरान विक्रेताओं द्वारा मांगे गए विभिन्न स्पष्टीकरणों पर चर्चा की गई।

ख) निर्यात क्षमता पर वर्चुअल संवादात्मक सत्र: प्रमुख वैश्विक संगठनों के लगभग 20 प्रतिनिधियों ने वेबिनार में भाग लिया। संवादात्मक वेबिनार के दौरान, मिधानि ने नए उत्पादों के विकास, निर्माण क्षमता, अनुसंधान एवं विकास विशेषज्ञता, सामरिक सामग्रियों के निर्माण में अपनाई जाने वाली प्रक्रिया की विशिष्टता के बारे में अपने अनुभव के बारे में बताया।

ग) स्लोगन/आकर्षक वाक्यांश लेखन प्रतियोगिता के पुरस्कार: 22 कर्मचारियों ने “एनरजाइज़-मोटिवेट-इन्स्पायर-इन्करेज एम्प्लाईस” विषय पर आयोजित स्लोगन/आकर्षक वाक्यांश प्रतियोगिता में भाग लिया। सभी प्रतिभागियों को "अनुशंसा प्रमाण पत्र" से सम्मानित किया गया। 12 विजेताओं को श्री एन. गौरी शंकर राव, निदेशक (वित्त) और श्री सुपार्थ सेन, महाप्रबंधक (सतर्कता) द्वारा स्मृति चिन्ह से सम्मानित किया गया।

घ) समापन समारोह: भारत की आजादी का अमृत महोत्सव कार्यक्रम का समापन श्री सुपार्थ सेन, महाप्रबंधक (सतर्कता) द्वारा धन्यवाद ज्ञापित करके किया गया। इस अवसर पर आयोजित किए गए सभी आयोजनों और आयोजन टीम के प्रयासों की सराहना की गई। धन्यवाद ज्ञापन के बाद, कार्यक्रम में भाग लेने वाले सभी प्रतिभागियों ने वर्चुअली और शारीरिक रूप से राष्ट्रगान में हिस्सा लिया।

यूएडीएनएल के निगम कार्यालय का उद्घाटन

02 जुलाई, 2021 को डॉ. एस. के. झा, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, मिधानि और सीईओ, यूएडीएनएल ने श्री एन. गौरी शंकर राव, निदेशक (वित्त) और वरिष्ठ अधिकारियों की उपस्थिति में मिधानि परिसर में उत्कर्ष एल्युमिनियम धातु निगम लिमिटेड (यूएडीएनएल) के निगम कार्यालय का उद्घाटन किया। यहाँ यूएडीएनएल की गतिविधियों का संचालन किया जाएगा।

टाइटेनियम शॉप-II की आधारशिला

डॉ. एसके झा, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, मिधानि ने श्री एन. गौरी शंकर राव, निदेशक (वित्त), वरिष्ठ अधिकारियों और मिधानि के कामगार प्रतिनिधियों की उपस्थिति में 15 जुलाई, 2021 को "टाइटेनियम शॉप-II" की आधारशिला रखी। शॉप की उत्पादन क्षमता 1500 टन टाइटेनियम सिल्लियां प्रतिवर्ष होगी।

'बिग ब्लू बटन' की शुरुआत

25.09.2021 को डॉ. एस. के. झा, सीएमडी, मिधानि और डॉ. उपेंद्र वेन्नम, आईपीओएस, मुख्य सतर्कता अधिकारी ने संयुक्त रूप से "आजादी का अमृत महोत्सव" के तहत मिधानि के इंट्रानेट सिस्टम में एक उन्नत ओपन सोर्स वेब कॉन्फ्रेंसिंग, ऑनलाइन शिक्षण और अर्जन के मंच 'बिग ब्लू बटन' की शुरुआत की। यह एप्लिकेशन ऑडियो, वीडियो, स्लाइड (व्हाइट बोर्ड नियंत्रण के साथ), चैट और स्क्रीन के रियल टाईम शेयरिंग का समर्थन करता है। प्रशिक्षक नेटवर्क के भीतर दूरस्थ छात्रों को संभाषण, बहु-उपयोगकर्ता व्हाइटबोर्ड और ब्रेकआउट रूम के साथ एंगेज कर सकते हैं। यह सुविधा अब मिधानि में सभी को उपलब्ध होगी। यह वेब कॉन्फ्रेंसिंग, ऑनलाइन शिक्षण और चर्चा के लिए एक मुफ्त व बहुत प्रभावी मंच है। इस तरह के कार्य के लिए कंपनी अब तक सशुल्क इंटरनेट सेवाओं पर निर्भर थी।

एचएएल के एलसीए और एएलएच कार्यक्रमों के लिए टाइटेनियम और सुपर अलॉय उत्पाद

श्री आर माधवन, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक एचएएल, डॉ. एस. के. झा, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, मिधानि झंडी दिखाते हुए

मिधानि ने एलसीए और एएलएच कार्यक्रमों के लिए हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड को टाइटेनियम और सुपरअलॉय उत्पादों की एक खेप को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। इस खेप को श्री आर. माधवन, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक एचएएल, डॉ. एस. के. झा, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, मिधानि ने झंडी दिखाई। मिधानि एचएएल, भारत के अंतरिक्ष, रक्षा और परमाणु ऊर्जा कार्यक्रमों की सामरिक जरूरतों को पूरा करने के लिए टाइटेनियम अलॉय, विशेष अलॉय, सुपर अलॉय, विशेष स्टील के विभिन्न महत्वपूर्ण कच्चे माल और उत्पादों की आपूर्ति कर रहा है। श्री एन. गौरी शंकर राव, निदेशक (वित्त) मिधानि सहित अन्य उच्च अधिकारियों ने अपने उपस्थिति दर्ज की।

भेल त्रिची को एसजी ट्यूब्स रवाना की

मिधानि और एनएफसी ने भेल त्रिची को आपूर्ति की जाने वाली एसजी ट्यूबों की अपनी दूसरी खेप को रवाना किया। वर्तमान कैलेंडर वर्ष में यह दूसरी आपूर्ति है और तीसरी भी दिसंबर 2021 तक पूरी होने की उम्मीद है। मिधानि विभिन्न महत्वपूर्ण उत्पादों जैसे लट्रिक ट्यूब, अंत फिटिंग की आपूर्ति कर रही है और भारत के अंतरिक्ष, रक्षा और परमाणु ऊर्जा कार्यक्रमों की सामरिक आवश्यकता को पूरा करने के लिए विशेष अलॉय, सुपर-अलॉय, विशेष स्टील विकसित की है।

डॉ. दिनेश श्रीवास्तव, अध्यक्ष एवं सीईओ, एनएफसी तथा डॉ. एस. के. झा, सीएमडी, मिधानि झंडी दिखाते हुए

माननीय प्रधानमंत्री की 'मेक इन इंडिया' अवधारणा से प्रेरित होकर, मिधानि और एनएफसी ने मिलकर मैसर्स भेल (त्रिची) को महत्वपूर्ण स्टीम जेनरेटर (एसजी) ट्यूबों की आपूर्ति के लिए एक वैश्विक निविदा में भाग लिया और निविदा प्राप्त की। यहाँ यह ध्यान देने योग्य बात हो सकती है कि, अतीत में, या तो अंतिम फिनिश की स्थिति में एसजी ट्यूबों को विदेशी विक्रेताओं से खरीदा गया था या महत्वपूर्ण फोर्ज्ड/रोल्ड इनपुट कच्चे माल का आयात करके स्वदेशी रूप से परिवर्तित किया गया था। इसके अलावा, दुनिया भर में कुछ ही उल्लेखनीय निर्माता हैं जिनके पास इन ट्यूबों का उत्पादन करने की क्षमता है। भारत में मिधानि/एनएफसी संयुक्त रूप से एकमात्र निर्माता है जिसके पास कच्चे माल के फोर्ज्ड बिलेट से लेकर आवश्यक एसजी ट्यूब्स तक निर्माण करने की क्षमता है।

तेलंगाना राज्य बौद्धिक संपदा पुरस्कार

डॉ. एस. के. झा, सीएमडी, मिधानि पुरस्कार गृहण करते हुए

मिधानि को 26.04.2021 को सीआईआई और तेलंगाना स्टेट ग्लोबल लिंकर द्वारा पीएसयू श्रेणी में सर्वश्रेष्ठ आईपी पोर्टफोलियो के लिए "तेलंगाना राज्य बौद्धिक संपदा पुरस्कार" से सम्मानित किया गया। आईपीएफ सेल की स्थापना के बाद से अप्रैल 2021 तक, मिधानि को 5 पेटेंट, 57 ट्रेडमार्क और 19 कॉपीराइट दिए गए हैं। श्री के.टी. रामा राव, माननीय उद्योग मंत्री, एमए और यूडी, आईटी, ई एंड सी, तेलंगाना सरकार, के करकमलों से डॉ. एस. के. झा, सीएमडी, मिधानि ने "तेलंगाना राज्य बौद्धिक संपदा पुरस्कार" ग्रहण किया।

प्रशिक्षण और विकास में उत्कृष्टता के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार

27.08.2021 वर्ल्ड एचआरडी कॉंग्रेस द्वारा आयोजित समारोह में मिधानि को प्रशिक्षण और विकास में उत्कृष्टता के लिए राष्ट्रीय पुरस्कारों के अंतर्गत "मध्य-स्तरीय प्रबंधन के लिए सार्वजनिक क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ विकास कार्यक्रम" पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। इस अवसर पर श्री सुपार्था सेन, महाप्रबंधक (सतर्कता) ने सभा को संबोधित किया और आत्मनिर्भर भारत में मिधानि के योगदान को रेखांकित करते हुए मिधानि द्वारा संचालित विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों की विशेषता पर प्रकाश डाला।

श्री सुपार्था सेन, महाप्रबंधक (सतर्कता) और श्री हरिकृष्ण वी. , अपर महाप्रबंधक (मा.संसा.) पुरस्कार ग्रहण करते हुए

तकनीकी लेख के लिए राजभाषा गौरव पुरस्कार

डॉ. बी.बालाजी पुरस्कार ग्रहण करते हुए

माननीय केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह जी की अध्यक्षता में राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा दि. 14 सितंबर 2021 को आयोजित हिंदी दिवस समारोह में, डॉ. बी. बालाजी, उप प्रबंधक, हिंदी अनुभाग एवं निगम संचार, मिधानि को वर्ष 2020-21 के लिए अहिंदी भाषी क्षेत्र के तहत "राजभाषा गौरव पुरस्कार" से सम्मानित किया गया। डॉ. बालाजी को उनके तकनीकी लेख "आर्मरिंग के उत्पादन में अग्रणी मिधानि" (हिंदी) के लिए केंद्रीय गृह राज्य मंत्री श्री अजय कुमार मिश्रा और श्री निशीथ प्रमाणिक द्वारा यह पुरस्कार दिया गया।

भारतीय अलॉय स्टील पर वेबिनार

दि. 23.07.2021 को मेटालॉजिक पीएमएस द्वारा "भारतीय अलॉय स्टील" पर आयोजित वेबिनार के लिए डॉ. एस. के. झा, सीएमडी, मिधानि ने विशेषज्ञ पैनलिस्ट की भूमिका निभाई। उन्होंने गोपालकृष्णन गणेशन, उप सचिव, इस्पात मंत्रालय, भारत सरकार; श्रीधर कृष्णमूर्ति, प्रबंध निदेशक, अरजस स्टील; आर.के. गोयल, अध्यक्ष, सारलोहा और प्रबंध निदेशक, कल्याणी स्टील्स लिमिटेड; रामचंद्र दलवी, निदेशक तकनीकी, सनफ्लैग स्टील; डॉ. अनिल धवन, कार्यपालक निदेशक, एएसपीए के साथ आभासी मंच साझा किया। सुश्री मोनिका बच्चन, संस्थापक, मेटालॉजिक पीएमएस मॉडरेटर थीं। डॉ. झा ने सामान्य रूप से भारतीय अलॉय स्टील और विशेष रूप से अलॉय और विशेष स्टील के उत्पादन में मिधानि के योगदान पर अपने विचार व्यक्त किए।

"अगली पीढ़ी द्वारा भारत के लिए हरित स्टील प्रौद्योगिकी" विषय पर वेबिनार

श्री बी. गौतम, उप प्रबंधक, मेल्ट शॉप और श्री भवनीश कुमार सिंह, सहायक प्रबंधक, पीएजी ने 24 जून 2021 को गोटू वेबिनार प्लेटफॉर्म पर मेटालॉजिक पीएमएस द्वारा "अगली पीढ़ी द्वारा भारत के लिए हरित स्टील प्रौद्योगिकी" विषय पर आयोजित वेबिनार में भाग लिया। मिधानि के दोनों युवा इंजीनियरों ने क्रमश: "भारत के लिए हरित स्टील प्रौद्योगिकी" और "स्टील निर्माण में CO2 उत्सर्जन को कम करने के लिए एक दृष्टिकोण" विषय पर तकनीकी वार्ता प्रस्तुत की, जिसकी अन्य पैनल सदस्यों और प्रतिभागियों ने सराहना की। श्री भवनीश कुमार सिंह, सहायक प्रबंधक, पीएजी ने "रॉकेट मोटर अनुप्रयोग के लिए 11CR-10NI-2MO-1TI PH मार्टेंसिटिक स्टेनलेस स्टील की रिंग फोर्जिंग का विकास" विषय पर 2 जून 2021 को सीएमएससी आयोजन समिति द्वारा “किंग्स्टन, ओंटारियो, कनाडा में आयोजित 32वें कनाडाई सामग्री विज्ञान सम्मेलन 2021" में वर्चुअली पोस्टर प्रस्तुत किया है। आयोजन समिति और प्रतिभागियों ने मिधानि के शोध की सराहना की। समिति ने श्री भवानीश कुमार सिंह को प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया।

मैं मशीनरी का नहीं बल्कि मशीनरी के प्रति पागलपन का विरोधी हूँ। होना यह चाहिए कि हम सब श्रम की बचत करने वाली मशीनरी के प्रति दीवाने हों। उद्योगपति श्रम की नहीं बल्कि श्रमिक की बचत करते रहते हैं, जब कि पहले ही हजारों लोग बेरोजगार हैं। भूख से मरने के लिए मजबूर कर दिए गए हैं। मैं मानव जाति के एक अंश के लिए नहीं, बल्कि सभी के लिए समय और श्रम बचाना चाहता हूँ। - महात्मा गांधी

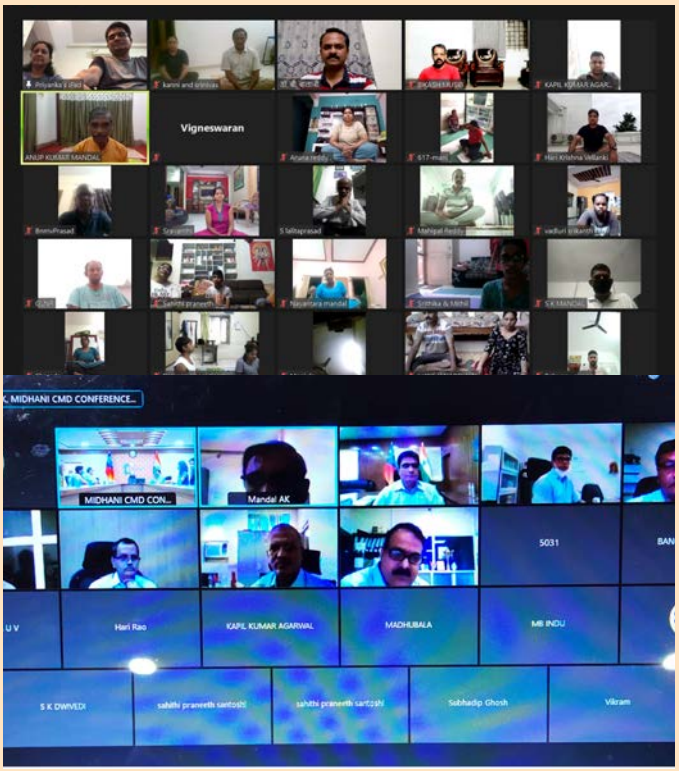

योग सप्ताह का आयोजन

मिधानि में 7वें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर, 14 से 21 जून 2021 तक "सदा योग करें, सदा स्वस्थ रहें" विषय पर तीन भागों (योग आसनों का अभ्यास, वार्ता और योगासन का प्रदर्शन) में ऑनलाइन योग सप्ताह समारोह का आयोजन किया गया।

श्री अनूप कुमार मंडल, अपर महाप्रबंधक (डाउन स्ट्रीम अनुरक्षण) मिधानि के मार्गदर्शन में सप्ताह के दौरान प्रतिदिन सुबह 5.45 से सुबह 7.00 बजे तक योग अभ्यास सत्र आयोजित किए गए। योग अभ्यास के अंतर्गत पांच चरणों का पालन किया गया - ध्यान, योगासन, प्राणायाम, ओंकारगीत और हस्यासन। अभ्यास सत्र में मिधानि के कर्मचारियों के अलावा देश के विभिन्न राज्यों के प्रतिभागियों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई।

21 जून, 2021 को “योग, कोविड के विरुद्ध एक ढाल” विषय पर एक वार्ता का आयोजन किया गया। वार्ता की अध्यक्षता मिधानि के सीएमडी डॉ. एस. के. झा ने की। वार्ता की शुरुआत हिंदी और अंग्रेजी में योग शपथ के साथ हुई थी। योग शपथ का पाठ हिंदी व अंग्रेजी में क्रमशः पी. रमा मल्लिका, कनिष्ठ सहायक-ए (क्रय), और पी. वर्षा, कनिष्ठ सहायक-ए (वित्त) द्वारा किया गया। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता श्री अनूप कुमार मंडल ने कहा कि योग से किसी भी बीमारी को ठीक किया जा सकता है। मानव शरीर की संरचना इस प्रकार हुई है कि वह बीमार नहीं पड़ सकता। योग को अपने जीवन में अपनाकर तन और मन, दोनों को स्वस्थ रखा जा सकता है। उन्होंने कहा कि अपने आस-पास खुशी का माहौल बनाए रखने के लिए योग से बेहतर कोई साधन नहीं है। उन्होंने प्रतिभागियों के साथ योग अभ्यास के लाभों को साझा किया और कहा कि धैर्य के साथ नियमित रूप से योग करने से हम हमेशा स्वस्थ रह सकते हैं। योग मानव शरीर को कोरोना वायरस से बचाने के लिए ढाल का काम करेगा। अपने संबोधन में डॉ. एस.के. झा ने कहा कि योग के अभ्यास से शरीर, मस्तिष्क और मन स्वस्थ रहेंगे, जिसका असर हमारी उत्पादन गतिविधियों पर भी पड़ेगा। योग हमें नकारात्मकता से रचनात्मकता की ओर ले जाने में सक्षम है। यह हमें एकता के सूत्र में बांध सकता है। उन्होंने मिधानि के सभी कर्मचारियों से योग को अपनी दिनचर्या में शामिल करने की अपील की। विभिन्न प्रकार के प्राणायाम से शरीर में ऑक्सीजन के स्तर को बनाए रखा जा सकता है। चल रही महामारी के दौरान, यह हमारी प्रतिरक्षा को बढ़ावा देने और हमारे शरीर की प्रतिरोध शक्ति को बढ़ाने के लिए एक बहुत ही प्रभावी उपकरण है।

"स्वस्थ शुरुआत के लिए स्वस्थ सोच"

"सदा योग करें, सदा स्वस्थ रहें"

इस अवसर पर संगठन के वरिष्ठ अधिकारियों ए. रामकृष्ण राव, महाप्रबंधक (मानव संसाधन), डी. अत्चुतराम, महाप्रबंधक (वाणिज्यिक), आर. विघ्नेश्वरन, उप महाप्रबंधक (वित्त) और कपिल कुमार अग्रवाल, उप प्रबंधक (वित्त) ने भी योग पर अपने विचार व्यक्त किए।

21 जून को शाम 6.30 बजे से 8.30 बजे तक 8 से 15 वर्ष, 15 से 30 वर्ष, 30 से 45 वर्ष और 45 वर्ष और उससे अधिक आयु वर्ग के प्रतिभागियों द्वारा योग गतिविधियों का ऑनलाइन प्रदर्शन किया गया। उल्लेखनीय है कि मिधानि द्वारा आयोजित योग सप्ताह समारोह में लोगों ने अपने परिवारों के साथ सक्रिय रूप से भाग लिया। सप्ताह भर चलने वाले समारोह के अंत में सभी प्रतिभागियों को ई-सर्टिफिकेट दिए गए।

ऑनलाइन योग सप्ताह समारोह के वीडियो मिधानि के यूट्यूब चैनल पर उपलब्ध हैं: "Mishra Dhatu Nigam Limited"
https:/ /www. youtube. com/ channel/ UCPKe6hP6DZKWh0lC3PWc3ig

महान व्यक्तित्वों की जयंती

डॉ. बाबा साहेब अंबेडकर

बाएँ से दाएँ: श्री एस. नरसिंह राव, अध्यक्ष, एससी एसोसिएसन तथा श्री बी. अशोक कुमार, उप महाप्रबंधक (सिविल-पीएमओ), महासचिव, एससी एसोसिएसन डॉ. बी. आर. अंबेडकर की मूर्ति को हार पहनाते हुए; डॉ. एस. के. झा, सीएमडी, मिधानि उपस्थित जन समूह को संबोधित करते हुए

भारत की महान हस्तियों, बाबू जगजीवनराम (5 अप्रैल), महात्मा ज्योति राव फुले (11 अप्रैल) और डॉ. बी.आर अंबेडकर (14 अप्रैल) की जयंती को कोविड-19 प्रोटोकॉल का पालन करके बड़े उत्साह के साथ मनाया गया। डॉ. एसके झा, सीएमडी, मिधानि ने महान हस्तियों के प्रति आभार व्यक्त किया। उन्होंने सभा को संबंधित करते हुए कहा कि निचले तबके को ऊँचा उठाने में देश के जिन महान व्यक्तियों ने योगदान दिया है उनमें बाबू जगजीवनराम, महात्मा ज्योति राव फुले और डॉ. बी.आर अंबेडकर का नाम बड़े आदर के साथ लिया जाता है। इन्होंने आदर्श स्थापित कर युवाओं को प्रगति के मार्ग पर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया है।

महात्मा ज्योति राव फूले

बाबू जगजीवनराम

बाएँ से दाएँ: श्री आरएसके सूर्य प्रकाश राव, वरिष्ठ प्रबंधक, पी1 अनुरक्षण, अध्यक्ष, ओबीसी एसोसिएशन उपस्थित जन समूह को संबोधित करते हुए; श्री बी अशोक कुमार, उप महाप्रबंधक (सिविल-पीएमओ), अध्यक्ष, एससी एसोसिएसन बाबू जगजीवनराम की मूर्ति को हार पहनाते हुए

राष्ट्रीय चिकित्सक दिवस

01 जुलाई 2021 को राष्ट्रीय चिकित्सक दिवस के अवसर पर मिधानि प्रबंधन ने चिकित्सा क्षेत्र से जुड़े अपने अग्रिम पंक्ति के सैनिकों को नमन किया और उनकी निस्वार्थ सेवाओं की सराहना की। अवसर पर उद्यम के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक डॉ. एस. के. झा ने कहा कि हमें सुरक्षित और स्वस्थ रखने के लिए चिकित्सा कर्मियों ने अपने प्राणों तक की परवाह नहीं की। उन्होंने राष्ट्रीय चिकित्सक दिवस के अवसर पर समस्त चिकित्सकों और उनकी बिरादरी के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की और उन्हें हार्दिक शुभकामनाएँ दीं। अवसर पर मिधानि प्रबंधन ने चिकित्सकों और उनके दल को सम्मानित किया।

बाएँ से दाएँ: डॉ. प्रवीण ज्योति, प्रबंधक (चिकित्सा), श्री ए. रामकृष्ण राव, म.प्र. (मा.संसा.), डॉ. वीर राजू, वरिष्ठ प्रबंधक (चिकित्सा), डॉ. एस. के. झा, सीएमडी, मिधानि, श्री एन. गौरी शंकर राव, निदेशक (वित्त), श्री डीवीएसएस प्रसाद, वरि. कार्य. ग्रेड-III एवं सीएमडी के तक.सहा., श्री एस. नरसिंह राव, अ.म.प्र. (प्रशा.) तथा डॉ. कृष्ण मोहन, से.नि., अ.म.प्र. (चिकित्सा), मिधानि।

स्वतंत्रता दिवस

15 अगस्त 2021 को मिधानि में बड़े उत्साह और उमंग के साथ 74 वाँ स्वतंत्रता दिवस मनाया गया। समारोह का आरंभ उद्यम के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक डॉ. एस. के. झा द्वारा ध्वजारोहण से हुआ। अवसर पर डॉ. झा ने उपस्थित जनसमूह को संबोधित करते हुए कहा कि देश की आजादी की रक्षा करने में हमारी सेनाओं के सहयोग के लिए हमें हमेशा तत्पर रहना चाहिए। आवश्यक शस्त्रों के निर्माण के लिए मिधानि द्वारा उत्पादित विशेष धातुओं की महत्वपूर्ण भूमिका है। हमें निरंतर आत्मनिर्भर भारत योजना के तहत देशीकृत उत्पादों को विकसित करना होगा। इस अवसर पर बीपीडीएवी स्कूल, मिधानि में पढ़ रहे अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और अन्य पिछड़ा वर्ग के छात्रों को अकादमिक में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने पर नकद पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित विभिन्न खेल प्रतियोगिताओं के विजेताओं को भी स्मृतिचिह्न से सम्मानित किया गया। समारोह में श्री प्रतीक शर्मा, प्रबंधक ने सिंथेसाईज़र पर देशभक्ति गीतों की धुनें बजाई, तो श्रीमती स्मिता कुमारी, तकनीशीयन, श्री विजय नाथ कुशवाह और श्री पी गोपी, तकनीशीयन और डॉ. बी. बालाजी, उप प्रबंधक ने देशभक्ति गीत गाए।

हिंदी दिवस समारोह

बाएँ से दाएँ: डॉ. बी. बालाजी, उ. प्र. (हिं.अ. एवं नि.सं.), श्री एन.वी.एस. रामगोपाल, अ.म.प्र. (गु.प्र.), श्री ए. रामकृष्ण राव, म.प्र. (मा.संसा.), डॉ. नरेश बाला, उप निदेशक (हिं.शि.यो.), हैदराबाद, डॉ. एस. के. झा, सीएमडी, मिधानि, श्री एन. गौरी शंकर राव, निदेशक (वित्त), श्रीमती रत्नकुमारी, कार्यपालक ग्रेड-I तथा श्री वासुदेव, हिंदी अनुवादक

मिधानि में हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में दि. 01 से 14 सितंबर 2021 तक आयोजित हिंदी पक्षोत्सव का 01 अक्तूबर 2021 को समापन समारोह संपन्न हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए उद्यम के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक डॉ. संजय कुमार झा ने कहा कि मिधानि में अधिक से अधिक कार्य हिंदी में करने का प्रयास किया जाता है। उन्होंने कर्मचारियों से आग्रह किया कि कार्यालय का दैनिक कामकाज हिंदी में करने के साथ-साथ हिंदी में वैज्ञानिक एवं तकनीकी लेखन करने का प्रयास करें। उन्होंने कर्मचारियों को स्मरण दिलाया कि हिंदी में तकनीकी लेखन को बढ़ावा देने के लिए ही मिधानि प्रबंधन द्वारा तकनीकी पुस्तक लेखन योजना शुरू की गई है। डॉ. झा ने कर्मचारियों से कहा कि आप इसका लाभ उठाएँ और मिधानि को राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाने का प्रयास करें।

हिंदी को लोकप्रिय बनाने के लिए विज्ञान व तकनीकी विषयों पर हिंदी में लिखना बेहद जरूरी है। हिंदी में प्रवीण कर्मचारियों को चाहिए कि वे हिंदी प्रशिक्षण के ज्ञान का लाभ उठाएँ और मिधानि के उत्पादों व उत्पादन प्रक्रिया पर हिंदी में लेखन करें। इससे तकनीकी क्षेत्र में हिंदी में लेखन का प्रसार तो होगा ही, साथ ही मिधानि का प्रचार भी होगा। उन्होंने आगे कहा कि हिंदी को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाने के लिए लिखित रूप में हिंदी को बढ़ावा दें।

उद्यम के निदेशक (वित्त), एन. गौरीशंकर राव ने अपने वक्तव्य में कहा कि देश भर में हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार और उसकी लोकप्रियता बढ़ाने के उद्देश्य से ही हर वर्ष चौदह सितंबर को 'हिंदी दिवस' मनाया जाता है। इसकी जिम्मेदारी हम सब लोगों पर भी है कि हम अपने कार्यालय में हिंदी के प्रचार-प्रसार को बढ़ावा दें। कार्यालय में हिंदी को प्रोत्साहन देने के लिए जिन योजनाओं को शुरू किया गया है उन सभी में हिस्सा लें और कार्यालय का अधिक से अधिक काम हिंदी में करें। सभी कर्मचारी हिंदी शिक्षण की कक्षाओं के द्वारा हिंदी का ज्ञान बढ़ाएं तथा अपने दैनिक कार्यालय के काम में उसका प्रयोग करें और हिंदी प्रयोग के स्तर पर कार्यालय को आगे बढ़ाएं। इस अवसर पर कार्यक्रम की मुख्य अतिथि डॉ. नरेशबाला, उप निदेशक, हिं. शि. यो., गृह मंत्रालय ने हिंदी प्रशिक्षण के प्रति मिधानि के कर्मचारियों के समर्पण को रेखांकित करते हुए कहा कि मैंने अपने कार्यकाल के दौरान यह देखा है कि मिधानि का हिंदी अनुभाग इस बात का हमेशा ध्यान रखता है कि उद्यम में सम्मिलित हुए सभी नए कर्मचारियों को हिंदी का प्रशिक्षण प्रदान किया जाए। उन्होंने मिधानि प्रबंधन की इस बात के लिए भी सराहना की कि यहाँ हिंदी में तकनीकी लेखन को प्रोत्साहित करने और कार्यालय का दैनिक कामकाज हिंदी में करने के लिए कर्मचारियों को बड़े स्तर पर सम्मानित किया जाता है।

बाएँ से दाएँ: डॉ. नरेश बाला, उप निदेशक (हिं.शि.यो.), हैदराबाद, डॉ. एस. के. झा, सीएमडी, मिधानि, श्री एन. गौरी शंकर राव, निदेशक (वित्त) मिधानि-लोगो अंकित छतरी का प्रदर्शन करते हुए। यह हिंदी दिवस के अवसर पर आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं को भेंट के रूप में दी गई।

कार्यक्रम के आरंभ में श्री विक्रम महान कैरे, अपर महाप्रबंधक (केएपीपी एवं रेलवे) ने माननीय गृह मंत्री तथा श्री निशांक कुमार जैन, उप महाप्रबंधक (टाइटेनियम) ने माननीय रक्षा मंत्री के संदेश का वाचन किया। कार्यक्रम में दीपक पार्थसारथी, अरिजित बनर्जी, रमा मल्लिका और पी वर्षा ने गीत गायन किया और प्रतीक शर्मा ने सिंथेसाईजर पर लोकप्रिय गीत प्रस्तुत किए। रोहित निगुड़कर, मंगलेश कुमार और डॉ. बी. बालाजी ने स्वरचित कविताओं का पाठ किया।

डॉ. एस. के. झा, सीएमडी, मिधानि तथा श्री एन. गौरी शंकर राव, निदेशक (वित्त) मिधानि प्रतियोगिताओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले गुणता प्रबंधन विभाग के विभागाध्यक्ष श्री एन. वी. एस. रामगोपाल, अ.म.प्र. (गु.प्र.) को रोलिंग ट्रॉफी 'मिधानि राजभाषा गरिमा पुरस्कार' से सम्मानित करते हुए

कार्यक्रम के अंत में अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, निदेशक (वित्त) तथा मुख्य अतिथि ने हिंदी पक्षोत्सव के अवसर पर आयोजित निबंध, शब्दावली, गायन, चित्र क्या कहता है, वाक, पुस्तक परिचय, प्रेरक प्रसंग और प्रश्नमंच प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कारों से सम्मानित किया। इन सभी प्रतियोगिताओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले गुणता प्रबंधन विभाग को रोलिंग ट्रॉफी 'मिधानि राजभाषा गरिमा पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। इसी के साथ वर्ष 2020-21 के दौरान कार्यालय का कामकाज हिंदी में करने वाले 46 कर्मचारियों को नकद पुरस्कार तथा प्रमाणपत्र प्रदान किए गए। इस अवसर पर मिधानि प्रबंधन ने उक्त प्रतियोगिताओं के निर्णायक-रोहित निगुड़कर (निबंध); विक्रम महान कैरे, राकेश रोशन, संतोष अगाले (वाक); शुभदीप घोष, नीना साह, कल्पना डांग (गायन); काजीम अहमद, राखी (चित्र क्या कहता है); अनुराधा पांडे (पुस्तक परिचय तथा प्रेरक प्रसंग) को स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया।

हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन

मिधानि में राजभाषा कार्यान्वयन समिति के तत्वावधान में राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार के दिशा निर्देशों का अनुपालन करते हुए उद्यम के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए प्रतिमाह हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन किया जा रहा है। इन कार्यशालाओं में दैनिक काम-काज में हिंदी के प्रयोग में आनेवाली कठिनाइयों को हल करने, इसके प्रयोग के सरल तरीकों पर चर्चा की जाती है। हिंदी में कार्यालय का कामकाज करने के प्रति झिझक को दूर करने का भी प्रयास किया जाता है। कार्यशालाओं में विभिन्न विषयों - मानक हिंदी लिपि, व्यावहारिक व्याकरण, प्रशासनिक एवं तकनीकी शब्दावली का दैनिक काम-काज में प्रयोग, व्यावहारिक अनुवाद, आलेखन एवं टिप्पण, राजभाषा नीति आदि पर विशेषज्ञों द्वारा अतिथि व्याख्यान करवाएँ जाते हैं।

अप्रैल से सितंबर 2021 तक की छहमाही के दौरान 04 कार्यशालाएँ आयोजित की गईं जिनसे 35 अधिकारी एवं 14 कर्मचारी लाभांवित हुए। इन कार्यशालाओ में श्री काज़िम महमद, सहायक निदेशक (राजभाषा), आरसीआई सहित हिंदी शिक्षण योजना से संबद्ध श्री श्रीरामसिंह शेखावत, प्राध्यापक; डॉ. रवीचंद्र, प्राध्यापक; श्रीमती बेला, सहायक निदेशक तथा श्री अंबादास, प्राध्यापक, से.नि. अतिथि व्याख्याता रहे।

हिंदी कार्यशालाओं की झलकियाँ

टंकण का अभ्यास करते हुए कार्यशाला के प्रतिभागीगण

श्रीमती बेला, सहायक निदेशक (हिं.शि.यो) के साथ प्रतिभागीगण

डॉ. रवीचंद्र, हिंदी प्राध्यापक (हिं.शि.यो.) व्याख्यान देते हुए

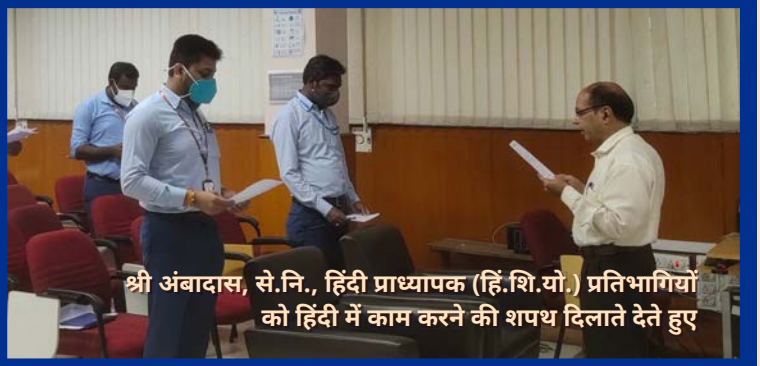
श्री अंबादास, से.नि., हिंदी प्राध्यापक (हिं.शि.यो.) प्रतिभागियों को हिंदी में काम करने की शपथ दिलाते देते हुए

श्री श्रीरामसिंह शेखावत, हिंदी प्राध्यापक (हिं.शि.यो.) ऑनलाइन व्याख्यान देते हुए

श्री काज़िम अहमद, सहायक निदेशक (आरसीआई) के साथ प्रतिभागीगण

डॉ. बी. बालाजी, उ.प्र. (हिं.अ. एवं नि.सं.) व्याख्यान देते हुए

श्री अंबादास, से.नि., हिंदी प्राध्यापक (हिं.शि.यो.) के साथ प्रतिभागीगण

डॉ. रवीचंद्र, हिंदी प्राध्यापक (हिं.शि.यो.) के साथ प्रतिभागीगण

आजादी की आवाज कार्यक्रम में रेडियो मिर्ची पर सीएमडी मिधानि का साक्षात्कार

आज़ादी का अमृत महोत्सव के एक भाग के रूप में मिधानि के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक डॉ. संजय कुमार झा ने स्वतंत्रता दिवस 2020 के उपलक्ष्य में मिधानि के लिए एक ब्रांड छवि बनाने के उद्देश्य से रेडियो मिर्ची के आज़ादी की आवाज़ कार्यक्रम के लिए एक विशेष साक्षात्कार दिया। डॉ. झा ने आजादी के अमृत महोत्सव पर हर्ष व्यक्त करते हुए रेडियो मिर्ची के श्रोताओं को स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनाएँ दीं। उन्होंने आत्मनिर्भर भारत के संबंध में श्रोताओं के साथ अपने विचार साझा किए और उन्हें 'मेक इन इंडिया' के लिए प्रेरित किया। अवसर पर मिधानि द्वारा आत्मनिर्भर भारत के लिए किए जा रहे बहुमूल्य योगदान के बारे में संक्षिप्त जानकारी दी।

डॉ. एस. के. झा, सीएमडी, मिधानि
रेडियो मिर्ची की आर जे भार्गवी के साथ

डॉ. एस. के. झा, सीएमडी, मिधानि द्वारा स्वतंत्रवार्ता को दिए गए साक्षात्कार का अंश

1. आज भारत विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में लगातार काम कर रहा है, इसके बावजूद हम अग्रणी देशों के मुकाबले काफी पीछे हैं। इसका क्या कारण है?

आज के परिप्रेक्ष्य में देखा जाए तो हम ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में निरंतर आगे बढ़ रहे हैं। हमारे शिक्षण संस्थानों से निकलने वाले युवाओं के पास अच्छा ज्ञान है। परंतु हमारी शिक्षा की सबसे बड़ी कमी है कि वह एक स्थिर पद्धति पर चलती है जिसमें बच्चों को ज्यादा से ज्यादा एक किताबी ज्ञान दे दिया जाता है और उसके आधार पर ही हम उनका मूल्यांकन करते हैं। जबकि हमारी शिक्षा ऐसी होनी चाहिए, जिसमें हम अपने युवाओं का कौशल विकास कर सकें। हमारे यहाँ व्यावहारिक प्रशिक्षण के संसाधन इतनी संख्या में उपलब्ध नहीं हैं। हमारे यहाँ बड़े-बड़े संस्थानों में भी इस तरह के संसाधन नहीं है कि हम अपने वैज्ञानिकों /इंजीनियरों को उनके पाठ्यक्रम के दौरान प्रशिक्षण दे सकें कि वे किसी प्रौद्योगिकी, उपकरण पर अपने कौशल का विकास करें और वे एक व्यावहारिक प्रशिक्षण लेकर अपने शिक्षण संस्थान से बाहर निकले। दूसरा, हम समय के मुताबिक परिवर्तन नहीं कर पाते हैं। इसके लिए हमें अपने तकनीकी और वैज्ञानिक क्षेत्र की आवश्यकता के अनुसार पाठ्यक्रम में परिवर्तन करना चाहिए। हम परिवर्तन करते भी हैं परंतु उसमें काफी समय लगता है। इसके कारण हमारे इंजिनियर या वैज्ञानिक अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उस क्षेत्र में आगे नहीं बढ़ पाते, क्योंकि उनके अंदर आत्मविश्वास की कमी होती है। तीसरा, हमारे देश में उनको एक उपयुक्त वातावरण नहीं मिलता। हमारे इंजिनियर और वैज्ञानिकों के पास काफी ज्ञान है। इसीलिए वे बाहर के देशों में चले जाते हैं क्योंकि विकसित देशों की कार्य शैली और संगठनात्मक संरचना हमारे देश की अपेक्षा बहुत ही अच्छी है।

2. मेक इन इंडिया की जब हम बात करते हैं तो मिधानि का योगदान किस तरह से रेखांकित किया जा सकता है?

1973 में अपनी स्थापना के बाद से मिधानि लगातार रक्षा, अंतरिक्ष और परमाणु ऊर्जा जैसे सामरिक क्षेत्रों में आपूर्ति के लिए अलॉय और धातु निर्माण कर रहा है। भारत सरकार की "मेक इन इंडिया" पहल के अंतर्गत विमानन और परिवहन उद्योगों की बढ़ती मांग को पूरा करने के अलावा, रक्षा, अंतरिक्ष और परमाणु ऊर्जा जैसे क्षेत्रों की बाजार मांग की पूर्ति के लिए उच्च अंत्य एल्यूमीनियम अलॉय का विनिर्माण करने के लिए मिधानि आंध्र प्रदेश के नेल्लोर में नालको के साथ मिलकर एक विनिर्माण संयंत्र "उत्कर्ष एल्युमिनियम धातु निगम लिमिटेड" की स्थापना कर रहा है।

3. इन दिनों देश को आत्मनिर्भर बनने का नारा दिया जा रहा है। इसके लिए हमें क्या करना चाहिए?

मिधानि की स्थापना के समय यह देखा गया था कि हम अपने देश में अंतरिक्ष, परमाणु उर्जा या रक्षा क्षेत्र में नई-नई तकनीकियों को लाना चाह रहे थे और अनुसंधान एवं विकास कार्य कर रहे थे। उस समय यह पाया गया कि धातुओं का इसमें काफी योगदान है। धातुओं के विकास के लिए कोई ऐसी जगह होनी चाहिए थी, जहाँ आर एंड डी से कुछ तकनीकी विकसित की सके। उसको एक उत्पादन स्तर पर लाकर देश में ही इन सभी क्षेत्रों में आपूर्ति की जा सके। जिसके लिए मिधानि की स्थापना की गई। मैं एक-दो क्षेत्रों की चर्चा करना चाहूँगा, जहाँ हमारा देश पहले से ही आत्मनिर्भर है। जैसे परमाणु ऊर्जा और अंतरिक्ष क्षेत्र। इन दोनों क्षेत्रों में तकनीकी और सामग्रियों के मामले में हम आत्मनिर्भर हैं। तकनीकी और सामग्री दोनों एक साथ चलते हैं। मिधानि ने इन दोनों क्षेत्रों में सामग्री की आवश्यकताओं को बहुत अच्छी तरह से पूरा किया है। आज हम रक्षा क्षेत्र में भी आत्मनिर्भरता का मिलाजुला असर देख रहे हैं। रक्षा क्षेत्र में जितनी तकनीकियों का भारत में विकास हुआ है, उनमें मिधानि का योगदान बहुत महत्वपूर्ण रहा है। लेकिन जो तकनीकी बाहर से आई है, उनमें हम थोड़ा पिछड़ जाते हैं। रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता प्राप्त करने के लिए रक्षा क्रय नीति में अभी कुछ परिवर्तन किए गए हैं। इसके अनुसार भारत सरकार ने कुछ उपकरणों को इंपोर्ट नेगेटिव लिस्ट में डाल दिया गया है। अर्थात अब भारत उन उपकरणों को आयात नहीं करेगा बल्कि अपने देश में ही विकसित करेगा। इस पहल में मिधानि अपना योगदान दे रहा है और आगे भी देता रहेगा।

4. आज भारत उत्पादन तथा धातुओं की तुलना में किस स्थान पर ठहरता है?

बहुत-सारी ऐसी धातुएँ हैं जिनका हम अभी भी आयात करते हैं जैसे कोबाल्ट, मोलिब्डेनम और निकेल। ये सभी हमारे लिए सामरिक धातुएँ हैं जिनका हमें अपने देश में ही निर्माण करना चाहिए। इस दिशा में बहुत सारे प्रयास किए जा रहे हैं और मुझे उम्मीद है कि आने वाले कुछ वर्षों में इसमें भी काफी परिवर्तन होगा क्योंकि जब हम आत्मनिर्भरता की बात करते हैं तो इन सब क्षेत्रों में भी हमें आत्मनिर्भरता लाने की जरूरत है। हम आयात के भरोसे अपने आप को ज्यादा दिन तक सुरक्षित नहीं रख सकते क्योंकि अगर रक्षा उपकरणों के निर्माण में आपकी आपूर्ति शृंखला बाधित होती है तो ऐसा होना देश की सुरक्षा के लिए घातक हो सकता है। जब हम अपने देश में किसी उपकरण का डिजाइन और विकास करते हैं तो उस समय हमारे डिजाइनर हमारे ही देश में विकसित सामग्री को लेकर डिजाइन कर सकते हैं क्योंकि डिजाइन के लिए उन्हें बहुत सारी प्रॉपर्टीज की जरूरत होती है। जब आप अपने देश में विकसित प्रॉपर्टी उनको देते हैं तो उसके आधार पर वह डिजाइन करते हैं और इस तरह से आपकी धातु की उपयोगिता उसमें लग जाती है। लेकिन जो उपकरण बाहर से आते हैं, उनकी सामग्री को अपने देश में विकसित करने में बहुत सारी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।

• शेष पृष्ट 29 पर

वर्तमान प्रौद्योगिकियों का उपयोग करते हुए बुलेट प्रतिरोधी उत्पादों का विकास

भगवान सिंह मीणा
उप प्रबंधक (आर्मरिंग विभाग)

कर्नल अश्वनी कुमार (सेवानिवृत्त)
अपर महाप्रबंधक (प्रभारी आर्मरिंग विभाग)

मुख्य शब्द: बीआर जैकेट, यूएचएमडब्ल्यूपीई, सेरेमिक, एके-47, एसएलआर, ग्राफ्नेन कोटिंग

मिधानि के आर्मर उत्पादों का परिचय:

मिश्र धातु निगम लिमिटेड (मिधानि) व्यक्तिगत सुरक्षा उत्पादों (बीआर जैकेट, बीआर हेलमेट और बीआर वेस्ट), समूह सुरक्षा (बीआर शील्ड, बीआर मोर्चा, बीआर ब्रीफकेस आदि), वाहन आर्मरिंग (टाटा -407, स्कोर्पियो, फॉर्च्यूनर आदि) और हेलिकॉप्टर आर्मरिंग (एमआई-17 हेलिकॉप्टर) का पिछले कई वर्षों से निर्माण कर रहा है और कई प्रतिष्ठित ग्राहकों जैसे भारतीय सेना, ओएफबी, सीएपीएफ, राज्य पुलिस आदि को आपूर्ति की गई है।

आर्मर क्या है:

- आर्मर की भूमिका किसी व्यक्ति, संरचना या उपकरण की रक्षा करना है
- प्रक्षेप्य की गतिज ऊर्जा को अवशोषित करके प्राप्त किया जाता है
- प्लास्टिक विरूपण और/या फ्रैक्चर प्रक्रियाओं द्वारा ऊर्जा को प्रमुखता से अवशोषित किया जा सकता है
- फ्रैक्चर प्रक्रिया के परिणामस्वरूप संरक्षित किए जा रहे टुकड़े को नुकसान नहीं होना चाहिए और पीछे की ओर एक और परत द्वारा संरक्षित किया जाना चाहिए
- आर्मर प्लेट को दो भूमिकाएं निभानी पड़ सकती हैं: एक सुरक्षात्मक भूमिका और संरचनात्मक भूमिका
- प्लेटफॉर्म (समग्र आर्मर/संरचनात्मक आर्मर) की सुरक्षा और संरचनात्मक आवश्यकताओं दोनों को प्रदान करने के लिए उच्च स्ट्रेन दर और उपयुक्त मोटाई पर पर्याप्त ताकत होने से दोनों भूमिकाओं को पूरा किया जा सकता है।

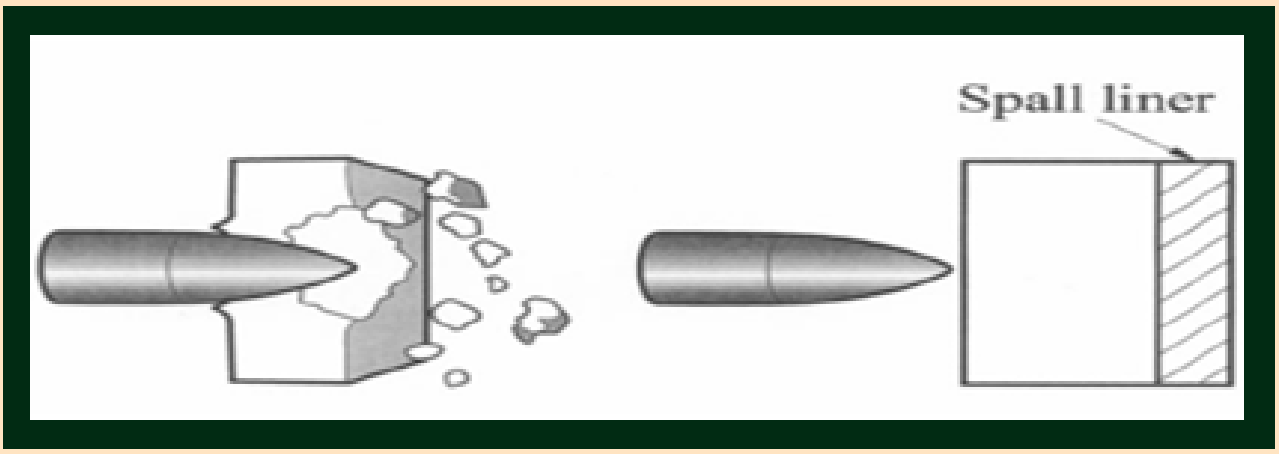

चित्र-1: बैलिस्टिक फायरिंग तंत्र

उपर्युक्त उत्पादों के निर्माण के लिए ग्राहक की आवश्यकता और सुरक्षा स्तर के आधार पर विभिन्न प्रकार के कच्चे माल का उपयोग किया जा रहा है जैसे अल्ट्रा हाई मॉलिक्यूलर वेट पॉलीइथाइलीन (यूएचएमडब्ल्यूपीई), केवलर, सिरेमिक (एसआईसी, बी4सी और एआई2O3 की मोनोलिथिक या टाइलें), आर्मर स्टील, स्पैल लाइनर आदि।

बुलेट प्रतिरोधी जैकेट का विकास:

बुलेट प्रतिरोधी जैकेट (बीआर जैकेट) बॉडी आर्मर का एक उत्पाद है जो प्रभाव को अवशोषित करने और आग्नेयास्त्र से धड़ में प्रवेश को कम करने या रोकने में मदद करता है और इसे पहनने वाले के महत्वपूर्ण अंगों को गोलियों या हथगोले के टुकड़ों से होने वाली चोट से बचाने के लिए डिज़ाइन किया गया है। उपयोगकर्ता द्वारा परिभाषित सुरक्षा स्तर (चित्र 1) मानदंड के अनुसार बुलेट प्रतिरोधी जैकेट के निर्माण के लिए समग्र सामग्री (सिरेमिक + यूएचएमडब्ल्यूपीई) की कई परतों का उपयोग किया जा रहा है।

Threat Level	Ammunition	Impact Velocity, m/s	Bullet weight, g
1	9 × 19 mm, SM, MP-5, Carbine)	430 ± 15	7.4 - 8.2
2	7.62 × 39 mm, AK 47, MSC	710 ± 15	7.45 - 8.05
3	7.62 × 51 mm, NATO ball, SLR/BAR	840 ± 15	9.4 - 9.6
4	5.56 × 45 mm, INSAS	890 ± 15	3.5 - 4.0
5	7.62 × 39 mm, AK 47, HSC	700 ± 15	7.45 - 8.05
6	7.62 × 54R, API	830 ± 15	10.3 -10.5

जैसा कि मिधानि विभिन्न ग्राहकों को बीआर जैकेट की आपूर्ति कर रहा है और ग्राहकों से लगातार प्रतिक्रिया प्राप्त कर रहा है। बीआर जैकेट के क्षेत्र में नई प्रौद्योगिकियों के विकास पर विचार करते हुए यह समझा जाता है कि उत्पाद के प्रदर्शन को बढ़ाने के लिए वजन, लचीलापन, विश्वसनीयता और सुरक्षा स्तर ध्यान देने योग्य मुख्य महत्वपूर्ण बिंदु हैं।

तदनुसार, मिधानि ने विश्व की वर्तमान तकनीकी प्रगति का उपयोग करते हुए उपर्युक्त महत्वपूर्ण बिंदुओं को ध्यान में रखते हुए अनुसंधान और विकास पर काम करना शुरू कर दिया है और इसके बाद उपर्युक्त वांछित क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य किया है। वर्तमान में, बीआर जैकेट का निर्माण बीआईएस 17051: 2018 मानक के अनुसार किया जा रहा है और मिधानि भी उत्पाद के निर्माण के दौरान उसी मानक का पालन कर रही है।

हाल ही में मिधानि ने एक नया मिधानि कवच उत्पाद (बीआर जैकेट) विकसित किया है, जिसमें सिरेमिक टाइलों से बंधे यूएचएमडब्ल्यूपीई की कई परतों से बने समग्र पैनलों पर ग्रेफीन नैनोकणों की कोटिंग का उपयोग किया गया है और समग्र पैनलों की ताकत में महत्वपूर्ण सुधार पाया गया है। जिसकी पुष्टि एनएबीएल मान्यता प्राप्त प्रयोगशाला में किए गए बैलिस्टिक परीक्षण द्वारा भी की गई है और परिणाम संतोषजनक पाए गए है। यह विकास मौजूदा जैकेट की तुलना में बुलेट प्रतिरोधी जैकेट के वजन में 20% और महत्वपूर्ण बैक फेस सिग्नेचर (बीएफएस) को कम करता है जो बीआईएस 17051: 2018 मानक के अनुसार मौजूदा बीआर जैकेट की तुलना में उल्लेखनीय रूप से अच्छी उपलब्धि है। मिधानि आर्मरिंग टीम द्वारा इस नए विकास के लिए आईपीआर पहले ही दायर किया जा चुका है और यह मूल्यांकन प्रक्रिया में है।

पृष्ठ 27 से जारी

5. कोरोना काल की महामारी के समय मिधानि ने अपने उत्पादन को सक्रिय बनाए रखा। यह कैसे संभव हो पाया?

2020-21 मिधानि सहित पूरी दुनिया के लिए एक चुनौतीपूर्ण वर्ष रहा है। आप जानते ही हैं, कोविड-19 महामारी से दुनिया पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा, जिसने पूरे वैश्विक ईको सिस्टम को अचानक बाधित कर दिया। कम अनुकूल परिस्थितियों में भी वर्ष 2020 के दौरान मिधानि में बहुत-से विकास कार्य संपन्न हुए हैं। यह सब हमारे कर्मचारियों की कड़ी मेहनत और लचीलेपन की वजह से ही संभव हो पाया कि हम लॉकडाउन खुलने के 15-20 दिनों के भीतर पूर्ण रुप से संचालन शुरू कर पाए। उस चुनौतीपूर्ण समय के दौरान कर्मचारियों के निरंतर समर्थन और समर्पण के कारण ही मिधानि का उत्पादन कार्य निरंतर चलता रहा।

कोविड -19 संकट के दौरान आत्मरक्षा हेतु प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के आयुर्वेदिक उपाय

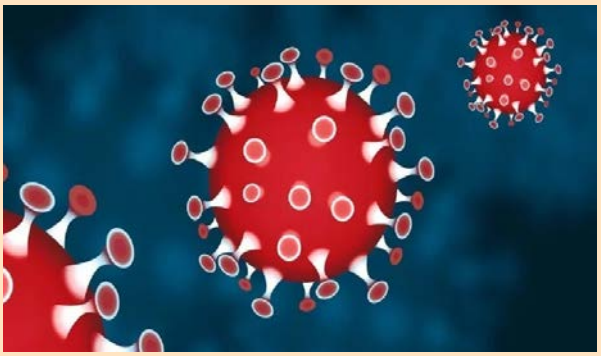

कोविड-19 के प्रकोप से विश्व की पूरी मानवता त्रस्त है, अनुकूलतम स्वास्थ्य बनाए रखने में शरीर की प्राकृतिक रक्षा प्रणाली (रोग प्रतिरोधक क्षमता) महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। हम सभी जानते हैं कि रोकथाम इलाज से बेहतर है। हालांकि अभी तक कोविड-19 के लिए कोई औषधि नहीं बनी है, लेकिन निवारक उपाय करना अच्छा होगा जो इस समय हमारी रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाते हैं।

आयुर्वेद, जीवन का विज्ञान होने के नाते, स्वस्थ और सुखी जीवन के लिए प्राकृतिक उपहारों का प्रचार करता हैं। निवारक देखभाल पर आधारित आयुर्वेद का व्यापक ज्ञान स्वस्थ जीवन को बनाए रखने के लिए "दिनचर्या" - दैनिक पथ्यापथ्य और " ऋतुचर्या" – मौसमी पथ्यापथ्य की अवधारणाओं से निकला हैं। यह पादप आधारित विज्ञान है, प्रत्येक व्यक्ति अपने बारें में जागरूकता, सादगी और सामंजस्य द्वारा अपनी रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाकर और उसे बनाए रखकर इसे कर सकता है जिसको आयुर्वेद के शास्त्रीय ग्रंथों में महत्व दिया गया है।

आयुष मंत्रालय, श्वसन स्वास्थ्य का विशेष उल्लेख करते हुए निवारक स्वास्थ्य के साथ रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने के लिए निम्नलिखित स्व-परिचर्या दिशा निर्देशों की अनुशंसा करता हैं। ये आयुर्वेदिक साहित्य और वैज्ञानिक प्रकाशनों द्वारा समर्थित हैं।

अनुशंसित उपाय

I. सामान्य उपाय

1. दिनभर गर्म पानी पीना।
2. आयुष मंत्रालय की सलाह पर 30 मिनट के योगासन, प्राणायाम और ध्यान का दैनिक अभ्यास करना। (# घर पर योग करें #घर में रहें #सुरक्षित रहें)
3. खाना पकाने में हल्दी, जीरा, धनिया और लहसुन जैसे मसालों की अनुशंसा की जाती हैं।

ऑल इंडिया इंस्टिट्यूट ऑफ़ मेडिकल साइंसेज (एम्स) के सफाई कर्मी मनीष कुमार कोविड -19 की वैक्सीन लेते हुए

II. रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के आयुर्वेदिक उपाय

1. सुबह के समय 10 ग्राम (एक चम्मच) च्यवनप्राश लें। मधुमेह रोगियों को शुगर-फ्री च्यवनप्राश लेना चाहिए ।
2. तुलसी, दालचीनी, काली मिर्च, शुण्ठी एवं मुनक्का से निर्मित हर्बल चाय/काढ़ा दिन में एक या दो बार पीएँ । यदि आवश्यक हो, तो अपने स्वाद के लिए गुड अथवा ताजा नींबू रस मिलाएं ।
3. गोल्डन मिल्क-150 मिली गर्म दूध में आधा चम्मच हल्दी मिलाकर दिन में एक या दो बार लेना चाहिए ।

III. आसान आयुर्वेदिक प्रक्रियाएं

1. अनुनासिक प्रयोग:
   सुबह और शाम दोनों नासिका में (प्रतिमर्श नास्य) तिल का तेल, नारियल तेल अथवा घी लगाएँ ।
2. ऑइल पुलिंग थैरेपी :
   एक चम्मच तिल अथवा नारियल का तेल मुंह में डालें । पीएं नहीं, 2 से 3 मिनट के लिए मुंह में हिलाएं और गर्म पानी के कुल्ले के साथ थूक दें। इसे दिन में एक या दो बार किया जा सकता हैं।

IV. सूखी खांसी/गले में खराश होने पर

1. दिन में एक बार ताजा पुदीने की पत्तियों अथवा अजवाइन के साथ भाप लेने का अभ्यास कर सकते हैं।
2. खांसी/गले में खराश होने की स्थिति में 2-3 बार गुड/ शहद के साथ लौंग पाउडर मिलाकर ले सकते हैं।
3. ये उपाय आम तौर पर सामान्य सूखी खांसी और गले में खराश का इलाज करते हैं। हालांकि, इन लक्षणों के बने रहने पर डॉक्टरों से परामर्श करना बेहतर है।

उपर्यक्त उपायों को कोई भी अपनी यथा संभव सुविधानुसार अपना सकता हैं। ये उपाय देश के निम्नलिखित प्रख्यात वैद्यों द्वारा सुझाए गए हैं जो संक्रमणों के प्रति व्यक्ति की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ा सकते हैं।

1.पदमश्री वैद्य पी आर कृष्णकुमार, कोयंबटूर
2.पदम भूषण वैद्य देवेन्द्र त्रिगुना, दिल्ली
3.वैद्य पी एम वारियर, कोट्टक्कल
4.वैद्य जयंत देवपुजारी, नागपूर
5.वैद्य विनय वेलंकर, थाणे
6.वैद्य बी एक प्रसाद, बेलगाम
7.पदमश्री वैद्य गुरदीप सिंह, जामनगर
8.आचार्य बालकृष्ण जी, हरिद्वार
9.वैद्य एम. एस. बघेल, जयुपर
10.वैद्य आर. बी. द्विवेदी, हरदोई, यू पी
11.वैद्य के. एन. द्विवेदी, वाराणसी
12.वैद्य राकेश शर्मा, चंडीगढ़
13.वैद्य अबिचल चट्टोपाध्याय, कोलकाता
14.वैद्य तनूजा नेसरी, दिल्ली
15.वैद्य संजीव शर्मा, जयपुर
16.वैद्य अनूप ठाकर, जामनगर

अस्वीकारण: उपर्युक्त सलाह कोविड-19 के किसी उपचार का दावा नहीं करती हैं।

आयुष मंत्रालय की वेबसाइट से साभार

दिल्ली स्थित ऑल इंडिया इंस्टिट्यूट ऑफ़ मेडिकल साइंसेज (एम्स) के 34 वर्षीय सफाई कर्मी मनीष कुमार भारत में कोविड - 19 की वैक्सीन लेने वाले पहले व्यक्ति बने। भारत में पहला मामला आने के लगभग एक वर्ष बाद, 16 जनवरी को भारत में सबसे बड़े टीकाकरण अभियान की शुरुआत हुई, जिससे जीवन अस्त-व्यस्त करने वाली एवं जानलेवा इस महामारी से उबरने की राह पर चलने की शुरुआत हुई |

नई शिक्षा नीति 2020 : शिक्षा क्षेत्र में एक बहुआयामी बदलाव

पीयूष पालिवाल
प्रबंधक (रेफ्रैक्टरी अनुरक्षण)

प्रस्तावना:

जुलाई 2020 में केंद्रीय मंत्रीमंडल द्वारा 'नई शिक्षा नीति 2020' को अनुमोदन प्रदान किया गया। यह शिक्षा नीति 2020, 34 वर्ष पुरानी शिक्षा नीति 1986 को प्रतिस्थापित करेगी। स्वतंत्र भारत की यह तीसरी शिक्षा नीति है। इस नीति को सर्वप्रथम पूर्व कैबिनेट सचिव टी.एस.आर. सुब्रहमण्यम की अध्यक्षता वाली समिति ने एक स्वरूप प्रदान किया। तत्पश्चात डॉ. कृष्णस्वामी कस्तूरीरंगन की अध्यक्षता वाली समिति ने प्रारूप नई शिक्षानीति प्रदान की। इस नीति को परामर्श की अभूतपूर्व प्रक्रिया द्वारा स्वरूप प्रदान किया गया है जिसमें कि 2.5 लाख ग्राम पंचायतों, 600 शहरी निकायों आदि से प्राप्त सुझावों को शामिल किया गया है।

डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक', तत्कालीन शिक्षा मंत्री

उद्देश्य तथा प्रमुख बातें:

नई शिक्षा नीति 2020 का उद्देश्य विद्यालयी एवं कॉलेज स्तर की शिक्षा प्रणाली में परिवर्तन स्थापित करके एक ऐसे शिक्षा तंत्र की स्थापना करना है जोकि 21वीं सदी की जरूरतों के अनुकूल हो। सतत विकास लक्ष्य की योजनाओं के अनुकूल रहते हुए, भारत को विश्व के एक अग्रणी देश के रूप में ला खड़ा करना है। इस नीति की प्रमुख बातें निम्न प्रकार हैं-

- सुलभ गुणवत्ता युक्त शिक्षा की उपलब्धता सुनिश्चित करना, जिसमें समाज के सामाजिक एवं आर्थिक पिछड़े वर्ग के लोग भी आसानी से शिक्षा प्राप्त सकें।
- शिक्षा के क्षेत्र में केंद्र तथा राज्य सरकार के सकल घरेलू उत्पाद का 6% व्यय सुनिश्चित करना।
- सुरक्षित गुणवत्ता युक्त 'प्रारंभिक बाल्यवस्था सुरक्षा एवं शिक्षा' प्रणाली को आंगनवाड़ी केंद्रों के माध्यम से स्थापित करना।
- नई शिक्षा नीति में 5+3+3+4 प्रणाली के पाठ्यक्रम की व्यवस्था का अनुमोदन किया गया है।
- बहुभाषा तथा मातृभाषा पर जोर:- कक्षा 5 तक के सभी शिक्षार्थियों को मातृभाषा में शिक्षा उपलब्ध कराना तथा इसके बाद त्रिभाषा व्यवस्था को सुनिश्चित करना।
- व्यवसायिक शिक्षा:- कक्षा 6 से व्यवसायिक शिक्षा उपलब्ध कराने की व्यवस्था सुनिश्चित कराई जाएगी, जिससे कि कौशल विकास सही समय पर प्रारंभ किया जा सके।
- स्नातक स्तर पर प्रवेश तथा निकास की व्यवस्था:- स्नातक स्तर पर शिक्षार्थियों को यह लचीलापन प्रदान किया जाएगा, जिसमें कि वे विभिन्न स्तर (वर्षों की शिक्षा) पर प्रवेश तथा निकास कर सकें। उसी के अनुसार सर्टिफिकेट, डिप्लोमा अथवा स्नातक की उपाधि दी जाएंगी।
- 21वीं सदी के अनुरूप कृत्रिम बुद्धिमत्ता, मशीन लर्निंग, क्रिप्टो, व्लॉकचेन संबंधी आधुनिक पाठ्यक्रम शामिल किए जाएंगे।

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि नई शिक्षा नीति 2020, अपने आप में शिक्षा क्षेत्र में, एक बहुआयामी बदलाव लाना चाहती है। लेकिन इन सभी लक्ष्यों तथा योजनाओं के क्रियान्वयन में कई चुनौतियाँ है, जिनको संज्ञान में रखना नितांत आवश्यक है।

चुनौतियाँ एवं मुद्दे:

विभिन्न क्रियान्वयन संबंधित चुनौतियाँ एवं मुद्दे निम्न प्रकार हैं-

1. वित्तपोषण:- वर्तमान में भारत अपने सकल घरेलू उत्पाद का 4.3% ही शिक्षा के क्षेत्र में व्यय करता है। सार्वजनिक व्यय प्रति छात्र की गणना में भारत विश्व में 62वें स्थान पर है। पहले भी कई बार विभिन्न समितियों द्वारा यह सुझाव दिया गया है कि भारत को सकल घरेलू उत्पाद का 6% शिक्षा के क्षेत्र में व्यय करना चाहिए किंतु पिछले कई वर्षों से इसमें कोई बढोत्तरी नहीं हुई है। इसीलिए यह (वित्तीय पोषण) सुनिश्चित कर पाना एक जटिल चुनौती होगी तथा इसके लिए वित्त के नए आयाम खोजने होंगे।
2. संघीय व्यवस्था:-'शिक्षा' क्षेत्र को संविधान की समवर्ती सूची में रखा गया है। विभिन्न राज्यों के विभिन्न शिक्षा बोर्ड है जोकि उस राज्य में शिक्षा प्रणाली निर्धारित तथा क्रियान्वित कराते हैं। नई शिक्षा नीति 2020 में कई ऐसे प्रावधान हैं जिसमें कि केंद्र स्तर पर एकल प्रणाली की व्यवस्था का अनुमोदन है, जैसे कि नए 'मानक निर्धारण निकाय', 'परख' की स्थापना करना। ऐसे प्रावधानों को लागू करने के लिए विभिन्न राज्यों के साथ सलाह तथा उनकी सामूहिक भागीदारी सुनिश्चित करना एक जटिल चुनौती साबित हो सकता है।
3. मानसिक बदलाव एवं शिक्षकों का प्रशिक्षण:- नई शिक्षा नीति 2020 में कई अभूतपूर्व बदलाव लाने की चेष्टा की गई है। ये सभी बदलाव शिक्षकों तथा शिक्षातंत्र से जुड़े नौकरशाही की मानसिक सोच में बदलाव के बिना संभव नहीं है। साथ ही, शिक्षकों का प्रशिक्षण भी उतना ही आवश्यक है क्योंकि शिक्षा प्रदान करने की अंतिम कड़ी के रूप में उनका योगदान सर्वोपरि है।
4. मातृभाषा से संबंधी चुनौतियाँ:- मातृभाषा के आधार पर शिक्षा को बढ़ावा तथा त्रिभाषा शिक्षा की व्यवस्था अपने आप मे शिक्षा को बढ़ावा देने की दिशा में अच्छा कदम है किंतु भारत में अनेक राज्यों में कई भाषाएँ बोली एवं पढ़ी जाती हैं। किसी एक भाषा मे पढ़ाई होने से, रोजगार के अवसर प्राप्त होने में कठिनाइयाँ आ सकती हैं। अत: इस प्रावधान का उचित रूप से अवलोकन एवं क्रियान्वयन आवश्यक है।
5. व्यवसायिक शिक्षा से संबंधित चुनौतियाँ एवं विचारणीय मुद्दे:- नई शिक्षा नीति 2020 में व्यवसायिक शिक्षा को कक्षा 6 से ही प्रारंभ करने की व्यवस्था का अनुमोदन है। यह व्यवस्था कुछ दुष्परिणाम भी ला सकती है। जैसे कि 18 वर्ष से कम की उम्र में ही नौकरी से जुड़ जाना तथा शिक्षा को अधूरा छोड़ देना, गरीब वर्ग के बच्चों को नौकरी पाने के लिए बाध्य हो जाना इत्यादि।
6. पाठ्यक्रम में प्रवेश तथा निकास वर्ष के लचीलेपन की व्यवस्था को सही प्रकार से लागू करने के लिए विस्तृत मंथन की आवश्यकता है। अन्यथा यह व्यवस्था शिक्षार्थियों एवं विद्यालयों में भ्रम उत्पन्न कर सकती है। जैसे कि दिल्ली विश्वविद्यालय में 4 वर्ष की स्नातक शिक्षा का प्रावधान, किन्हीं कारणों की वजह से वापस लेना पड़ा था।

नई शिक्षा नीति 2020 के सूत्रधार

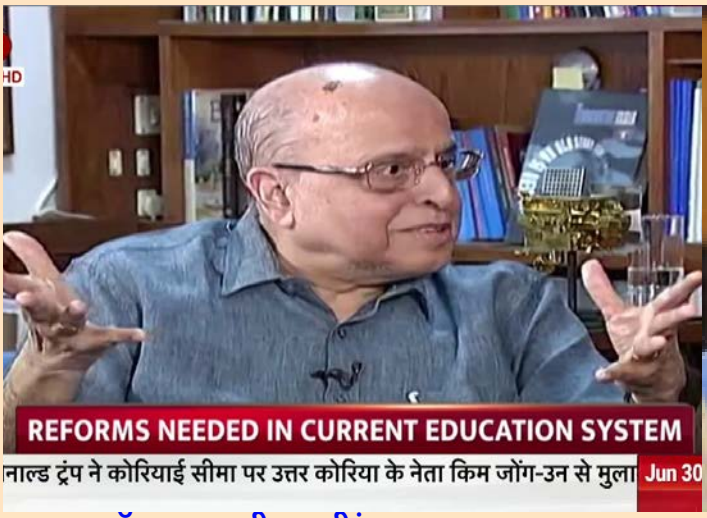

डॉ. कृष्णस्वामी कस्तूरीरंगन

टी.एस.आर. सुब्रहमण्यम

7. शिक्षा के निजीकरण एवं व्यवसायीकरण को बढ़ावा मिलने का डर हमेशा ही बना रहता है।
8. मंहगी शिक्षा:- विदेशी विश्वविद्यालयों के भारत में शिक्षण संस्थानों की स्थापना के कारण यह आशंका कि शिक्षा की उपलब्धता मंहगी हो जाएगी।
9. त्रिभाषा व्यवस्था एवं मातृभाषा व्यवस्था की आलोचना इस वजह से भी की जा रही है कि यह शिक्षा के संस्कृतिकरण की दिशा में कदम है।

उपसंहार:

नई शिक्षा नीति 2020 वास्तविक रूप में कई आमूल-चूल परिवर्तनों का प्रावधान करती है जोकि 21वीं सदी की आवश्यकताओं के सुसंगत है। साथ ही विविध नियोजन संबंधी प्रावधान, शिक्षा को गुणवत्तायुक्त बनाने में सक्षम हैं। आवश्यकता है कि केंद्र तथा राज्य सरकार मिलजुल कर यथार्थ लक्ष्यों (अल्पकालिक एवं दीर्घकालिक) को सुनिश्चित करें तथा उनको पाने की दिशा में क्रियान्वयन प्रारंभ करें तथा आवधिक समीक्षा करें।

हुसैन सागर

डॉ.बी. बालाजी
उ. प्र. (हिं.अ. एवं नि.सं.)

कितनी सुंदर झील
नीला पानी
नीले आसमान के नीचे
देखकर लगा
कश्मीर की झीलें भी ऐसी ही होंगी?

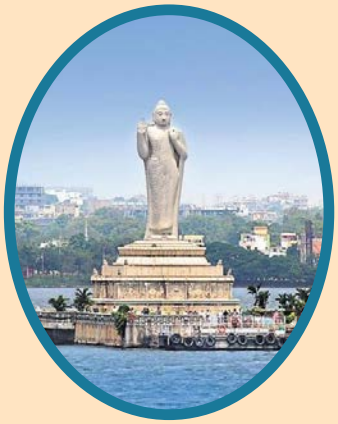

लेकिन!
बदबू अजीब सी
यह पानी की गंध तो नहीं है!
किनारे पर प्रतिष्ठित
देवताओं को देखकर
ताज्जुब होता है
ये सचमुच शिलाखंड ही हैं
इनमें प्राण नहीं है?

अहो!
उस विशाल शिलाखंड की प्रशंसा क्या करें?
वह केवल लोगों का मनोरंजन करने को खड़ी
की गई मूरत है
'धम्मं शरणं गच्छामि'
सुनने-सुनाने में अच्छा लगता है;
आचरण में?

झील से पानी की गंध आएगी कभी
सुंदरता महकेगी कभी
हमें प्रतीक्षा करनी होगी।

नई शिक्षा नीति 2020 सिर्फ कागजी खानापूर्ति न हो

विचार मंथन की बातों से आत्मभरोसा लाएंगे,
शिक्षा की नवजोत जलाकर अँधियारा मिटाएंगे।

राज कुमार साहू
वरि. तक. सहा. (यूटिलिटिज)

प्रस्तावना:

शिक्षा हमारे जीवन का एक अभिन्न हिस्सा है जो तय करती है कि हमारा भविष्य उज्ज्वल होगा या अंधकार तले कालिख में मिलेगा। किसी देश की शिक्षा नीति यह दर्शाती है कि वहाँ की सरकार की प्राथमिकता में शिक्षा का क्या स्थान है तथा वह उससे कितना सरोकार रखती है। हाल ही में हुए विश्व के टॉप शिक्षण सर्वे के आधार पर भारत की पिछड़ती शिक्षा व्यवस्था को ध्यान में रखकर नई शिक्षा नीति – 2020 को आशा भरी नजरों से देखा हा रहा है, जिससे इसमें कुछ सुधार हो सके, कई सकारात्मकता के साथ नई शिक्षा नीति में कई प्रकार की चुनौतियाँ रोड़ा बनती नजर आती है जिनके बीच नई शिक्षा नीति सिसकियाँ लेती नजर आती है।

नई शिक्षा नीति - 2020 का परिचय:

गौरतलब है कि भारत में 1968 व 1986 के 34 साल बाद तीसरी बार शिक्षा नीति में परिवर्तन का प्रयास इसरो के पूर्व अध्यक्ष डॉ. के. कस्तूरीरंगन की अध्यक्षता वाली समिति के द्वारा किया गया है जिसका उद्देश्य सभी को शत प्रतिशत भविष्यपरक व रोजगारपरक शिक्षा देना है। इसके लिए मानव संसाधन विकास मंत्रालय का नाम बदलकर शिक्षा मंत्रालय किया गया है जिसके अंतर्गत शिक्षा विभाग आता है। अब बच्चों का स्कूल में दाखिला 6 साल के बजाय 3 साल में किया जाएगा। इस नई शिक्षा नीति में 10+2 स्ट्रीम सिस्टम का विलोप करके 5+3+3+4 मल्टिपल एंट्री व एग्जिट सिस्टम को अपनाया गया है। जिसके तहत बच्चों को पहले 5+ प्रोग्राम में पहले 3 साल तक किसी स्कूल या आँगनवाड़ी में प्ले स्कूल की तरह खेलना-कूदना शामिल रहेगा। तत्पश्चात क्रमश: कक्षा 1 व कक्षा 2 की पढ़ाई कराई जाएगी। इसे फाउंडेशन स्टेज नाम दिया गया है। इसमें कोई परीक्षा नहीं होगी। इसके बाद अगले +3 प्रोग्राम में क्रमश: कक्षा 3, 4 व 5 की पढ़ाई होगी जो स्थानीय या मातृभाषा में होगी। इसे प्रीपेटरी स्टेज नाम दिया गया है। इसके बाद अगले +3 प्रोग्राम में क्रमश: कक्षा 6, 7 व 8 की पढ़ाई कराई जाएगी, जिसे मिडिल स्टेज नाम दिया गया है। इसमें परंपरागत विषयों के अलावा कंप्यूटर की शिक्षा तथा अन्य रुचि अनुसार व्यवसायिक पाठ्यक्रम शामिल किया जाएगा और भारत की अनुसूचित भाषाओं में से किसी एक भाषा की पढ़ाई कराई जाएगी। इसके अंतिम +4 प्रोग्राम के तहत कक्षा 9, 10, 11 व कक्षा 12 की पढ़ाई कराई जाएगी, जिसे सेकेण्डरी स्टेज नाम दिया गया है। इसमें स्ट्रीम जैसे कामर्स, आर्ट या विज्ञान न चुनकर किसी से भी रुचि अनुसार विषय चयन कर सकेंगे और एक विदेशी भाषा का भी ज्ञान दिया जाएगा।

स्नातक की पढ़ाई को 3 के बजाए 4 साल कर दिया गया है, जिसमें क्रमश: प्रथम, द्वितीय, तृतीय व चतुर्थ वर्ष में सफल होने पर सर्टिफिकेट, डिप्लोमा, डिग्री व अनुसंधान स्नातक का प्रमाण पत्र दिया जाएगा। यदि कोई विद्यार्थी किसी कारणवश प्रथम या किसी अन्य स्नातक के दौरान पढ़ाई छोड़ना चाहे तो छोड़ सकता है और कुछ सालों बाद वहीं से प्रवेश ले सकेगा। इस नीति को लागू करने के लिए मजबूत अवसंरचना की आवश्यकता होगी, जिसकी प्रारंभिक लागत बहुत अधिक होगी व शीघ्र अपना पाना एक बड़ी रूकावट नजर आती है।

नई शिक्षा नीति - 2020 की चुनौतियाँ:

कई सकारात्मक पहलू के साथ इस नीति को निम्न चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है:

1. इसे मूर्त रूप देने के लिए कुशल, योग्य व व्यवसायिक पाठ्यक्रम के गुणी शिक्षकों की आवश्यकता होगी तथा वर्तमान उपलब्ध शिक्षकों में इतने गुणों का तीव्र विकास टेढ़ी खीर नजर आता है।
2. इस नई नीति में शिक्षकों की योग्यता, उनसे संबधित नियम व दिशानिर्देशों के बारे में कोई प्रावधान नहीं है।
3. फाउंडेशन व प्राईमरी स्टेज में स्थानीय भाषा में पढ़ाने की बात कही गई है। यदि कोई विद्यार्थी अंग्रेजी जैसे विषय में कमजोर है या रुचि नहीं रखता है तो वह और पिछड़ता चला जाएगा, जिससे आगे परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है।
4. इस नई नीति में भारत की कुल जीडीपी का 6% खर्च करने की बात कही गई है जो कि वर्तमान में सिर्फ 3% है और 2017-18 के सर्वे के आधार पर सरकार अभी तक 2.5% भी खर्च नहीं कर पाई है। ऐसे में सरकार इतना बजट वह भी कोरोना महामारी में चोपट पड़ी अर्थव्यवस्था से कैसे जुटाएगी व कितना खर्च करेगी, यह बड़ा प्रश्न है।
5. भारत में संघीय व्यवस्था को अपनाया गया है, जिसमें केंद्र व राज्य सरकारें अपने स्तर पर निर्णय ले सकती हैं। लेकिन इस नीति में सिलेबस व दिशानिर्देशों से संबंधित एक केंद्रीय समिति की बात कही गई है, जो संघीय व्यवस्था पर एक चोट है।
6. इस पूरी नीति मे खेलों से संबंधित पाठ्यक्रम के बारे में कोई प्रावधान नहीं है।
7. वर्तमान शिक्षा नीति के अनुसार शिक्षा का व्यवसायिकरण नहीं किया जा सकता है। आज हम देख रहे हैं कि शिक्षा का बड़े स्तर पर व्यापारीकरण हो रहा है। किंतु इस शिक्षा नीति में सरकार गुणवत्तायुक्त प्राइवेट शिक्षा को बढ़ावा देने की बात कह रही है। ऐसे में स्थिति कैसी होगी, यह कल्पना से परे है।
8. सर्व शिक्षा अभियान का सपना तभी पूरा होगा जब समाज का निम्न तबका भी इसमें शामिल हो लेकिन वे प्राइवेट स्कूलों की भारी फीस की वजह से अपने बच्चों को सरकारी स्कूलों में दाखिला दिलाते हैं। इस नीति में सरकार ने सरकारी स्कूलों के उन्नयन के बारे में कोई प्रावधान नहीं किया है।
9. इस नीति के तहत व्यवसायिक पाठ्यक्रम को मिडिल स्टेज में रखने की बात कही गई है। इसके लिए योग्य शिक्षकों के अभाव की संभावना है तथा उच्च शिक्षा में कोई वरीयता मिलेगी या शीर्ष प्रशासनिक सेवाओं के लिए योग्य होंगे या नहीं, यह साफ नहीं है।
10. प्राइमरी स्टेज में ही एक राज्य से दूसरे राज्य में शिफ्ट होने पर बच्चे की पढ़ाई की भाषा क्या होगी, यह साफ नहीं है।
11. इस नीति के तहत एआईसीटीई व यूजीसी को खत्म करके एक केंद्रीय नियामक बनाने की बात कही गई है। ऐसे में संस्थानों के केंद्रीयकरण व स्वायत्तता का खतरा मंड़राता रहेगा।
12. इसे लागू करने के लिए आधुनिक तकनीकी से युक्त प्रयोगशाला, आधुनिक सूचना प्रौद्योगिकी तथा आधुनिक व मजबूत अवसंरचना की आवश्यकता होगी, जिसकी प्रारंभिक लागत बहुत अधिक होगी व शीघ्र अपना पाना एक बड़ी रूकावट नजर आती है।

उपसंहार:

नई शिक्षा नीति - 2020 आधुनिकता से युक्त, भविष्यपरक, रोजगारपरक व वर्तमान मांग के अनुसार फिट नजर आती है। बहरहाल सरकार इस नई शिक्षा नीति को किस तरह से लागू करेगी, यह भविष्य के गर्भ में है। किंतु सरकार से गुजारिश है कि सिर्फ कागजी खानापूर्ति के बजाय इसकी चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए इसे सही मायने में लागू करें। तभी शिक्षा के क्षेत्र में अचूक परिवर्तन की उम्मीद कर सकते हैं नहीं तो यह नीति रेत की दीवार की भांति सिमट कर रह जाएगी।

ज्ञान बढ़ा निर्माण करेंगे, संकीर्णता का अवसान करेंगे,
नवीन शिक्षा नवनीत होगी, नवल मंतव्य का अवदान करेंगे।

जिंदगी का दूसरा नाम ही संघर्ष है

सी. सुरेश रेड्डी
वरिष्ठ सहायक (गुणता प्रबंधन)

बाज पक्षी के बचपन की शुरुआत बहुत ही मुश्किल से होती है। बाज पक्षी को बचपन में ही ऐसी ट्रेनिंग दी जाती है, जिससे वह अपने जीवन में बड़ी-बड़ी मुश्किलों का भी आसानी से सामना कर पाते हैं। जब किसी भी पक्षी का बच्चा पैदा होता है तो वह कम से कम एक महीने तक तो अपने माता-पिता पर निर्भर रहता ही है। वह अपने खाने-पीने से लेकर जब तक चलना नहीं सीख जाता, तब तक वह अपने माता-पिता की नजर में रहता है। लेकिन बाज पक्षियों में ऐसा नहीं होता है। बाज पक्षी सबसे उल्टा चलते हैं। जब एक बाज मादा अपने बच्चे को जन्म देती है तो उस समय से ही उसके बच्चे की ट्रेनिंग शुरू हो जाती है कि उसे अपने जीवन में कैसे संघर्ष करना है। पैदा होने के कुछ ही दिन बाद बाज के बच्चे का प्रशिक्षण शुरू हो जाता है।

उसके प्रशिक्षण के पहले पड़ाव में मादा बाज अपने बच्चे को चलना सिखाती है। जब बच्चा भूखा होता है तो उसकी मां खाना लाती है जैसा कि सभी पक्षी करते हैं। लेकिन मादा बाज सीधे अपने बच्चे को खाना नहीं देती, वह खाना लाकर अपने घोंसले से कुछ दूरी पर खड़ी हो जाती है और तब तक अपने बच्चे को खाना नहीं देती, जब तक वह खुद चलकर उसके पास नहीं आ जाता। जब बाज के बच्चे को तेज भूख लगती है तो वह खाने के लिए अपनी मां के पास जाता है।

धीरे-धीरे संघर्ष करके मुश्किल से चलकर अपनी माँ के पास पहुंचता है। उस समय उसे कई सारी मुश्किलों का भी सामना करना पड़ता है। उसे कई चोटें भी लगती हैं। लेकिन उसकी माँ उसे तब तक खाना नहीं देती, जब तक वह खुद उसके पास चलकर नहीं आ जाता। उसकी माँ कठोर दिल रखकर सिर्फ उसके पास आने का इंतजार करती है। उसे कोई मदद नहीं करती है। जब वह चलना सीख जाता है तो दूसरा पड़ाव आता है। यह पड़ाव उसके लिए बहुत ही मुश्किल होता है। इसमें मादा बाज अपने बच्चे को अपने पंजों में पकड़कर उसे खुले आसमान में ले उड़ती है। अपने बच्चे को पंजों में दबाकर वह लगभग 12 से 14 किलोमीटर ऊपर तक ले जाती है और वहां से उसे छोड़ देती है। वह बच्चा नीचे गिरने लगता है और वह उसे देखती रहती है। जब उसका बच्चा जमीन से 1 या 1.5 किलोमीटर दूर रह जाता है तो बच्चे को डर लगने लगता है कि वह अब मर जाएगा और अपने पंख फड़फड़ाने लगता है। उड़ने की पूरी कोशिश करता है। फिर भी वह उड़ नहीं पाता तो मादा बाज उसे झट से आकाश में ही पंजों में पकड़ लेती है और उसे जमीन पर गिरा देती है।

ऐसा उसकी माँ तब तक करती है जब तक वह पूरी तरह से उड़ना नहीं सीख जाता। इस प्रकार से एक बाज के बचपन की शुरुआत होती है और उसे इस कठिन प्रशिक्षण को करना पड़ता है। इस कठिन प्रशिक्षण से वह अपने जीवन में बहुत कुछ सीखता है। इसके कारण ही वह अपने से दुगुने वजन वाले पक्षी का भी आसानी से शिकार कर सकता है और उसे आसमान में लेकर उड़ सकता है। इस प्रशिक्षण से वह मजबूत और शक्तिशाली हो जाता है।

हमें बाज के इस प्रशिक्षण से जीवन में बड़ी सीख मिलती है। हर व्यक्ति, जानवर या पक्षी अपने बच्चों से बहुत प्यार करता है। इसका मतलब यह नहीं कि वह उसे अपने पर ही निर्भर रहने दे। उसे जिंदगी में मुश्किलों का सामना करना भी सिखाएँ जिसके कारण वह अपनी प्रतिभा दिखा सके और अपना एक बेहतर व्यक्तित्व का निर्माण कर सके।

हमेशा अपने बच्चों को यही सिखाएँ कि जिंदगी का दूसरा नाम ही संघर्ष है। अपने जीवन में यदि कुछ भी हासिल करना है तो संघर्ष करना ही पड़ेगा।

काव्यकुंज

फागुन मास बड़ा शरारती

फागुन मास बड़ा शरारती,
सबकी नजरें कुछ ताड़ाती।
भीगी जुल्फे, भीगी चुनरी,
देखो ! राधा अपने आँचल को संभालती।

अल्हड़ बेल सी बलखा जाती,
झूम-झूम सखियों को रंग लगाती।
दूर खड़ी टोली ग्वालो की,
अनजाने में यह उनको भी बहकाती।

ग्वालों का दल भी मतवाला,
कंधे चौड़े और नयन विशाला।
देख के उनको ललचाए राधा,
सोचे भीगा दो मुझे गोपाला।

हौले-हौले गोपाल ने बढ़के,
राधा को बन्धन में बांधा।
रंगे गाल जो राधा के तो,
लगे चाँद से इंद्रधनुष हों झाँका।

राधा गोपाल खेले होली,
निहार के ब्रिज ने सुध-बुध खो दी।
बोले सब मिल कर श्याम रंग रंग जा,
हर रात है पूनम हर दिन होली।

श्रीमती दीपाली निगुड़कर
धर्मपत्नी श्री रोहित निगुड़कर
उप महाप्रबंधक (वित्त)

प्राचीन भारत में खेल-कूद

सी सुदर्शन वेंकटेश
कनि.स्टाफ नर्स
चिकित्सा सेवाएँ

मनुष्य के जीवन में मनोविनोद का बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। अपने दिन-प्रतिदिन संघर्ष से जब व्यक्ति तनाव के कारण उब जाता है तो उसे कुछ क्षणों के लिए मनोविनोद की आवश्यकता होती है। जिससे उसे नई ऊर्जा, स्फूर्ति, नैतिकता, साहस, शौर्य आदि की

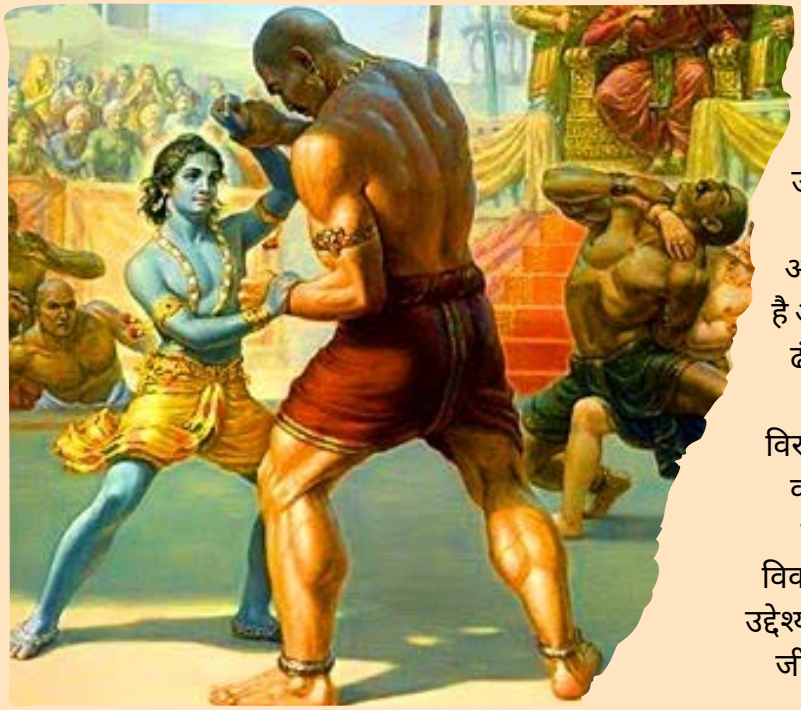

प्राप्ति होती है। मनोविनोद के कई साधन हैं उनमें से सबसे प्रमुख, रुचिकर और लोकप्रिय साधन खेल-कूद है। जब से मानव इतिहास अथवा सभ्यता की क्रमिक जानकारी उपलब्ध है और जब से मनुष्य की जीवनशैली व्यवस्थित ढंग से चली आ रही है, तब से उसने संघर्ष भरे व्यस्त जीवन के कुछ क्षणों को आनंददायक विराम देने के लिए खेल-कूद के अनेक उपादानों का सहारा लिया है। बीतते काल के साथ-साथ खेलकूद और उसके विभिन्न साधनों में काफी विकास अथवा बदलाव आए हैं। प्रस्तुत लेख का उद्देश्य प्राचीन भारत के जनसामान्य के सामाजिक जीवन के प्रमुख पहलू खेल-कूद का महत्व तथा उसके विभिन्न साधनों को जानना है।

यह लेख अवधेश कुमार सिन्हा द्वारा रचित "प्राचीन भारत में खेल-कूद" (स्वरूप एवं महत्व) (2018) पुस्तक के परिचय के रूप में लिखा जा रहा है।

प्राचीन भारत में भी खेल-कूद आज की तरह घर के बाहर (आउटडोर) और अंदर (इनडोर) खेले जाने वाले खेलों के रूप में प्रचलित थे। घर के बाहर खेले जाने वाले खेलों में रथदौड़, घुडदौड़, मृगया, दौड़ प्रतियोगिता, जलक्रीड़ा, मल्लयुद्ध, पशु-पक्षियों के बीच द्वंद युद्ध का खेल, उद्यान क्रीड़ा, तीर-धनुष का खेल, दण्ड का खेल, मत्स्य पकडने का खेल आदि विशेष रूप से खेले जाते थे। जबकि घर के अंदर खेले जाने वाले खेलों में द्यूत क्रीड़ा, अक्ष क्रीड़ा (पासे का खेल) आदि खेले जाते थे। पूर्वकाल से ही मनुष्य अपनी सुरक्षा तथा अन्य आवश्यकताओं हेतु झुंड या समूह में रहता आया है। इसी कारणवश सारे खेल-कूद दो या दो से अधिक व्यक्तियों के बीच ही खेले जाते थे। एकांगी खेलों की चर्चा ऐतिहासिक संदर्भों में उपलब्ध नहीं है। कई बार खुदाइयों में अधिक संख्या में खिलौने और ऐसी वस्तुएँ प्राप्त हुई हैं जिनका प्रयोग खेलों में किया जाता था। वे वस्तुएँ मिट्टी, कांचली मिट्टी, शंख, संगमरमर, हाथीदंत, स्लेट, सेलखडी आदि से बनाई जाती थी। इन वस्तुओं को बनाने में लकड़ी का भी अधिक मात्रा में उपयोग हुआ होगा परंतु लकड़ी की वस्तुएँ इन शताब्दियों के बीतते-बीतते धरती की मिट्टी में विलीन हो गई, इसलिए उनके अवशेष प्राप्त नहीं है।

सिंधु घाटी की नगरी में पासे का खेल बहुत प्रसिद्ध था। हडप्पा सभ्यता के कुल सात पासे प्राप्त हुए हैं, जिसमें से चार पासे मिट्टी के, दो पत्थर के और एक कांचली मिट्टी के मिले। मोहेनजो-दड़ो काल के भी मिट्टी और पत्थर के पासे प्राप्त हुए हैं। उसी प्रकार लोथल के उत्खनन में घोड़ा, मेढ़ा, कुत्ता और बैल के सिर वाली गोटियाँ मिली हैं जो आज की शतरंज की गोटियों से मेल खाती हैं। उत्खनन में विभिन्न प्रकार के पत्थर, शीप, पेस्ट आदि की छोटी-बड़ी गोलियाँ भी मिली है। सिंधु घाटी के कुछ निवासी शिकार खेलने के शौकीन थे। इसका प्रमाण हमें दो ताबीजों पर मनुष्य को तीर-धनुष से एक बड़े हिरण और एक जंगली बकरे का शिकार करते हुए दिखाया गया है। पकायी हुई मिट्टी की छोटी-छोटी गोलियां भी मिली है जो गुलेल में लगाकर या विशेष प्रकार के धनुषों में लगाकर पक्षी और छोटे-छोटे जानवरों को मारने के लिए इस्तेमाल किए जाते थे। एक ताबीज पर उत्कीर्ण दो जंगली मुर्गों की मुद्राएँ आपस में लड़ने की हैं जिससे यह पता चलता है कि मुर्गों को लड़ाने का खेल भी बहुत प्रचलित था। तीतरों को भी द्वंद युद्ध के लिए प्रशिक्षित किया जाता था जिसके कारण आज भी सिंधु निवासी पिंजड़ों में तीतरों को पालते हैं। कुछ ताबीजों पर बैल की आकृति के पास मनुष्य भी अंकित हैं। इससे यह पता चलता है कि पशुओं और मनुष्यों के द्वंद युद्ध में मनुष्य-वृषभ युद्ध का खेल भी उस काल में बहुत प्रचलित रहा होगा। यह प्रथा क्रीट की सभ्यता में भी बहुत लोकप्रिय थी।

वैदिक काल के विभिन्न ग्रंथों में भी खेल-कूद का अनेक संदर्भों में उल्लेख मिलता है। ऋग्वेद में 'खेल' शब्द का उल्लेख मिलता है। विवस्वन्त नामक एक देवता के सम्मान में आयोजित दौड़ प्रतियोगिता, इस शब्द का अर्थ माना जाता है। उदाहरण स्वरुप 'आजिं खेलस्य' का अर्थ 'खेल की दौड़' है। वैदिक काल में रथदौड़ और घुड़दौड़ खेल-कूद के प्रमुख साधनों में से थे। यह खेल एक व्यक्ति के चातुर्य तथा दक्षता प्रदर्शित करने, विवाह के स्वयंवर में वधु के लिए योग्य और उचित वर ढूंढने के लिए तथा उपहार प्राप्त करने आदि विभिन्न उद्देश्य से आयोजित किए जाते थे। प्रत्येक गाँव या छोटे-छोटे ग्राम समूहों में घुड़दौड़ तथा रथदौड़ आदि के लिए एक निश्चित स्थान (रेस कोर्स) हुआ करता था। इसी स्थान पर विभिन्न उत्सवों और समाजों के अवसर पर घुड़दौड़ और रथदौड़ आयोजित किए जाते थे। इनमें विजेताओं को पारितोषिक दिए जाते थे। घुड़दौड़ के स्थान को 'काष्ठा या आजि' कहते थे। इसकी अंतिम सीमा को 'परमा काष्ठा' कहते हैं। ऋग्वेद तथा अथर्ववेद में कहा गया है कि घुड़दौड़ मैदान अर्धवृत्ताकार होता था। यह खेल राजाओं तथा सामान्य प्रजा में बहुत प्रचलित था। रथदौड़ आर्यों में बहुत प्रसिद्ध खेल था। इस प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त करने के लिए आर्य इंद्र, अग्नि आदि विभिन्न देवताओं की स्तुति करते थे।

वैदिक काल में घर के अंदर खेले जाने वाले खेलों में द्युतक्रीड़ा एवं अक्षक्रीड़ा काफी लोकप्रिय और सामान्य जीवन में प्रचलित थी। ऋग्वेद और अथर्ववेद में अक्ष शब्द का उल्लेख कई बार हुआ है, जिसे 'पासा' या 'गोटी' कहते है। ऋग्वेद में बताया गया है, अक्षक्रीड़ा में तिरपन पासों का प्रयोग होता था। इस खेल के लिए कोई निश्चित बोर्ड नहीं था, बल्कि जमीन पर ही गहरी रेखाओं को खींचकर उसे अक्षक्रीड़ा के पट रूप में प्रयोग करते थे। पासों को फेंकने की क्रिया को 'ग्राभ' तथा लगाए गए दाँव को 'विज' कहा जाता था। इस खेल का धार्मिक महत्व भी था। यह खेल अगन्याधेय और राजसूय आदि अवसरों पर खेला जाता था। ऋग्वेद के कई प्रसंगों में इस खेल के बुरे प्रभावों और उनकी निंदा का उल्लेख मिलता है। इस खेल से व्यक्ति के व्यक्तिगत और पारिवारिक जीवन में कष्ट होता था। एक हारे हुए खिलाड़ी की अपनी पत्नी सहित सारे धन के नुकसान पर विलाप करने की दुखद

अवस्था दयनीय है। इस दुर्व्यसन में जो एक बार फंस जाता है, फिर उसका इससे बाहर निकलना बहुत कठिन है।

'आखेट' भी वैदिक काल में बहुत प्रचलित था। यह खेल मनोरंजन, भोजन तथा पशुओं को पालतू बनाने के उद्देश्य से खेला जाता था। इसमें एक जाल बिछाया जाता जैसे कि एक बड़ा सा गड्ढा खोदकर जाल फैलाया जाता। इस प्रकार से पक्षी, हाथी, सिंह आदि जानवरों को पकड़ा जाता था। पक्षी पकड़ने वालो को 'निधपती' (बहेलिया) कहा जाता था। आर्यों का सिंह को आखेट द्वारा पकड़ने और वध करने का उल्लेख ऋग्वेद में मिलता है। शूकरों को दौड़ाकर कुत्तों की सहायता से पकड़ा जाता था। इस प्रकार मृगयाशील शिकारियों को 'मृगयु' कहा जाता था। वैदिक आर्य सामूहिक आमोद-प्रमोद के उद्देश्य से समन और उत्सव में मल्लयुद्ध का खेल भी आयोजित करते थे।

वैदिक काल का अंत होते-होते खेल के लिए 'क्रीड़ा' शब्द प्रयुक्त होने लगा। क्रीड़ा के विविध अंगों के लिए अनुक्रीड़ा, संक्रीड़ा, परिक्रीड़ा, आक्रीड़ा आदि शब्द प्रचलित थे। उस समय स्त्री-पुरुष, बाल-वृद्ध एकत्र होकर अनेक प्रकार के खेल-तमाशों जैसे हस्तियुद्ध, मेषयुद्ध, अजायुद्ध, दण्डयुद्ध, मल्लयुद्ध, रथदौड़, उद्यानक्रीड़ाऔर द्युतक्रीड़ा आदि क्रीड़ाओं में भाग लेते थे। रामायण और महाभारत में 'समाज' नामक क्रीड़ोत्सवों का उल्लेख आता है। नागरिकों के मनोरंजन हेतु समकालीन नगरों में मनोरंजन क्लब की व्यवस्था थी। जहाँ द्युत का खेल, अन्य खेल-कूद तथा नृत्य एवं संगीत के आयोजन होते थे। रामायण में ऐसे स्थलों का उल्लेख मिलता है-जैसे चित्रगृह, दिवागृह, दारुपर्वत, गृहातिगृहक, कदलीगृह, क्रीड़ागृह, कूटागर, लतागृह, निषकुट, नगरोपवन, पुष्पगृह, विहार एवं वर्धमानगृह। घर के बाहर खेलने वाले खेल लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण अंग थे। यह खेल समूहरूप में नगर के अंदर या बाहर नियुक्त स्थल पर खेले जाते थे। वहाँ लोगों के उठने-बैठने के लिए मंडप की व्यवस्था की जाती थी। महाभारत काल में बाल्यकाल में पांडव 'वीटा' से खेलते थे। वीटा का अर्थ जौ की आकृति जैसी चार अंगुल की लकड़ी है। यह छोटा लकड़ी का टुकड़ा एक बड़ी लकड़ी की सहायता से दूर फेंका जाता होगा जो आज के गिल्ली-डंडा खेल जैसा ही है। हाथी, घोड़ा, रथ और बैल के खिलौनों से भी बच्चे खेला करते थे। रामायण, अष्टाध्यायी एवं अन्य ग्रंथों से पता चलता है कि इस काल में मल्लयुद्ध या कुश्ती भी एक प्रसिद्ध खेल था। इसमें दो पहलवानों के बीच परस्पर मुठभेड़ होती थी। मल्लयुद्ध और बाहुयुद्ध सैनिकों के लिए प्रशिक्षण और मनोरंजन के रूप में प्रसिद्ध था। सुग्रीव और रावण इस खेल में निपुण माने जाते थे। मौर्य काल में हमें सामूहिक मनोरंजन का उल्लेख मिलता है। विहार, समाज और प्रहवण कुछ ऐसे साधन थे। इस काल में भी पशु-पक्षियों के द्वंद युद्ध का बहुत महत्व था। इस काल में धनुष-बाण का खेल, खड्ग युद्धों के खेल बहुत प्रचलित थे।

गुप्त काल तक आकर समाज में मनोरंजन के साधन विकसित हो चुके थे। इस काल में भी द्युतक्रीड़ा बहुत प्रचलित था और घर के बाहर खेले जाने वाले खेलों में आखेट, मृगया प्रमुख खेल थे। इस समय उत्तर भारत में मुर्गों की लड़ाई भी प्रसिद्ध थी।

इस तरह हम देखते हैं कि अवधेश कुमार सिन्हा ने 158 पृष्ठों की अपनी पुस्तक "प्राचीन भारत में खेल-कूद" (स्वरूप एवं महत्व) में प्राचीन भारत के पाँच कालखंडों में प्रचलित खेलकूद के विभिन्न प्रकार व साधनों की चर्चा की है - (1)सिंधु घाटी की सभ्यता का काल, (2) वैदिक काल, (3) सूत्रकाल से लेकर मौर्यों के उदय के पूर्व तक, (4) मौर्य काल (5) गुप्त काल। इसके अतिरिक्त लेखक ने सारांश तथा निष्कर्ष के अंतर्गत पुस्तक का सार तो दिया ही है साथ ही संदर्भिका व अनुक्रमणिका भी दी है। परिशिष्ट के अंतर्गत (क) प्राचीन भारत के परवर्ती काल में खेल-कूद का स्वरूप (ख) अन्य समकालीन सभ्यताओं / देशों में खेलों का स्वरूप भी प्रस्तुत किया है। खेलों से प्यार करने वालों को यह पुस्तक एक बार अवश्य पढ़नी चाहिए।

संदर्भ:
प्राचीन भारत में खेल-कूद, अवधेश कुमार सिन्हा (2018); मिलिंद प्रकाशन, हैदराबाद; मूल्य रू.205/-

मेरी प्रेरणा के स्रोत मेरे पिताजी

हरीश देवांगन
वरिष्ठ तक. सहा. (गुणता प्रबंधन)

मेरा नाम हरीश है। मैं गुणवत्ता नियंत्रण विभाग में कार्यरत हूँ। मैं दुर्ग जिले (छत्तीसगढ) का निवासी हूँ। मेरी प्राथमिक एवं 12वीं तक की शिक्षा दुर्ग में हुई है। मेरे पापा दर्जी है और माताजी गृहिणी है। मैं अपने घर में सबसे छोटा हूँ। इसके अलावा मेरे घर में मेरे बड़े भईयाँ एवं बड़ी दीदी है।

बात उन दिनों की है, जब मैं डिप्लोमा करने के लिए खैरागढ़ पॉलिटेक्निक महाविद्यालय में मेटलर्जी विषय लेकर अपने स्थानीय आवास से 60 किमी दूर बाहर पढ़ने के लिए गया था। यहाँ पर मुझे किराये के घर में रहकर तीन साल का डिप्लोमा कोर्स संपन्न करना था। चूंकि मेरी 12वीं तक की पढ़ाई गणित विषय से हुई थी, इस वजह से ही मेरा डिप्लोमा के प्रथम एवं द्वितीय सेमेस्टर में बहुत फायदा हुआ था। जबकि लगभग 80-85% लोग 10वीं पास करके ही डिप्लोमा करने आए थे, जोकि काफी डरे हुए और मायूम से दिख रहे थे।

डिप्लोमा के पहले साल में सबको सामान्य विषय (चाहे वो किसी भी ब्रांच से हो, इलेक्ट्रिकल, मेकेनिकल, कंप्यूटर साइंस और अन्य) पढ़ना पड़ता है। प्रथम सेमेस्टर की परीक्षा संपन्न हुई और बहुत से लोग जो 10वीं पास करके डिप्लोमा करने आए थे, उनकी गणित-1 में बैक लग गई। चूंकि मेरा गणित बहुत मजबूत था तो मैंने गणित में 96% अंक अर्जित किए और पूरे महाविद्यालय में 74% अंकों के साथ तीसरा स्थान प्राप्त किया। यह सन था 2008। मेरे गणित के अंक देखकर मेरे दोस्त मुझे गणित-1 की कोचिंग देने के लिए बोलने लगे, और मैंने अपने दोस्तों को कोचिंग देना प्रारंभ किया। धीरे-धीरे यह बात पूरे महाविद्यालय में फैल गई कि हरीश गणित-1 बैकर्स को कोचिंग दे रहा है। इसी बीच अन्य ब्रांच की लड़कियों ने भी मुझसे कोचिंग लेने के लिए अपनी इच्छा व्यक्त की और मैंने सबको पढ़ाना शुरु किया ताकि सब अच्छे अंको से उत्तीर्ण हो सके।

उन पाँच-छह लड़कियों में से कंप्यूटर साइंस की एक लड़की (नाम नहीं बता सकता) जो कि वहाँ की स्थानीय निवासी थी, उसको मेरे पढ़ाने का तौर-तरीका अच्छा लगने लगा और दिन-प्रतिदिन वो मेरे प्रति आकर्षित होती गई। उस समय मेरे पास एक फोन (नोकिया 1600) था, जो मेरे पापा ने मुझे अपने घर वालों से बातचीत करने के लिए दिया था। धीरे-धीरे ट्यूशन खत्म होने के बाद हम फोन पर घंटों बात किया करते थे। कब ये दोस्ती प्यार में परिवर्तित हो गई, हम दोनों को पता नहीं चला। दिन हो या रात, सुबह हो या शाम हम दोनों फोन पर ही बात करते रहते थे या कॉलेज बंक करके गार्डन में बैठकर बातें करते रहते थे। यह बात पूरे कॉलेज में फैल गई कि हम होनों प्यार में हैं। यह मेरे जीवन का गोल्डन टाइम था।

इसी बीच मेरे पिताजी ने मेरा स्थानांतरण खैरागढ़ पॉलिटेक्निक महाविद्यालय से, दुर्ग पॉलिटेक्निक में करवाने के लिए (जो कि मेरे घर के पास था) आवेदन डाला, ताकि मैं अपने घर पर रहकर ही अच्छी शिक्षा और संस्कार ग्रहण कर सकूँ। दुर्ग पॉलिटेक्निक कॉलेज बड़ी-बड़ी कंपनियों के कैंपस सिलेक्शन (टाटा, जिंदल आदि) के लिए जाना जाता था। स्थानांतरण की बात सुनकर मेरा मन मचलने लगा क्योंकि अगर मैं वहाँ गया तो मेरी स्वतंत्रता मुससे छिन जाएगी और प्रेमिका ने भी मुझे वहाँ जाने से मना किया था। मैंने उस आवेदन को वहीं फाड़कर कचरे के डिब्बे में डाल दिया और पिताजी को बोल दिया कि सारी सीटें भर गई है, अब स्थानांतरण मुश्किल लग रहा है। मुझे खैरागढ़ में ही रहकर पढ़ना पड़ेगा। खैरागढ़ एशिया के एकमात्र संगीत विश्वविद्यालय "इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय" के लिए जाना जाता था। इसी बीच हम एक-दूसरे के फिर करीब आने लगे।

फिर एक दिन उस लड़की के भाईयों को हमारे प्रेम-प्रसंग के बारे में पता चला और उन्होंने मुझे अपनी बहन के सामने धमकी दी कि आगे से दोनों साथ में दिखें तो अच्छा नहीं होगा। यह सब सुनकर मैं काफी डर गया और वो लड़की भी पूरी तरह से टूट गई और मामूस हो गई। उसने मुझे हम दोनों को अलग रहने की सलाह दी और मुससे तुरंत रिश्ता तोड़ दिया। ऐसा लग रहा था जैसे मैं कहीं जाकर सुसाईड कर लूँ। ये सब इतनी जल्दी हुआ कि मानो पूरी कायनात मेरे खिलाफ हो गई हो। मैंने उससे संपर्क बनाने की पूरी कोशिश की लेकिन वो अजनबियों की तरह से व्यवहार करने लगी। मैं पूरी तरह डिप्रेशन में चला गया और द्वितीय सेमेस्टर की परीक्षा में इंजिनियरिंग ड्राइंग विषय में मेरी बैक लग गई। यहाँ मैं अपने जीवन में पहली बार किसी परीक्षा में फेल हुआ। इसी बीच अगले सेमेस्टर के प्रारंभ होने से पहले 15-20 दिनों की छुट्टी मिली और हम सब दोस्त अपने-अपने घर चले गए।

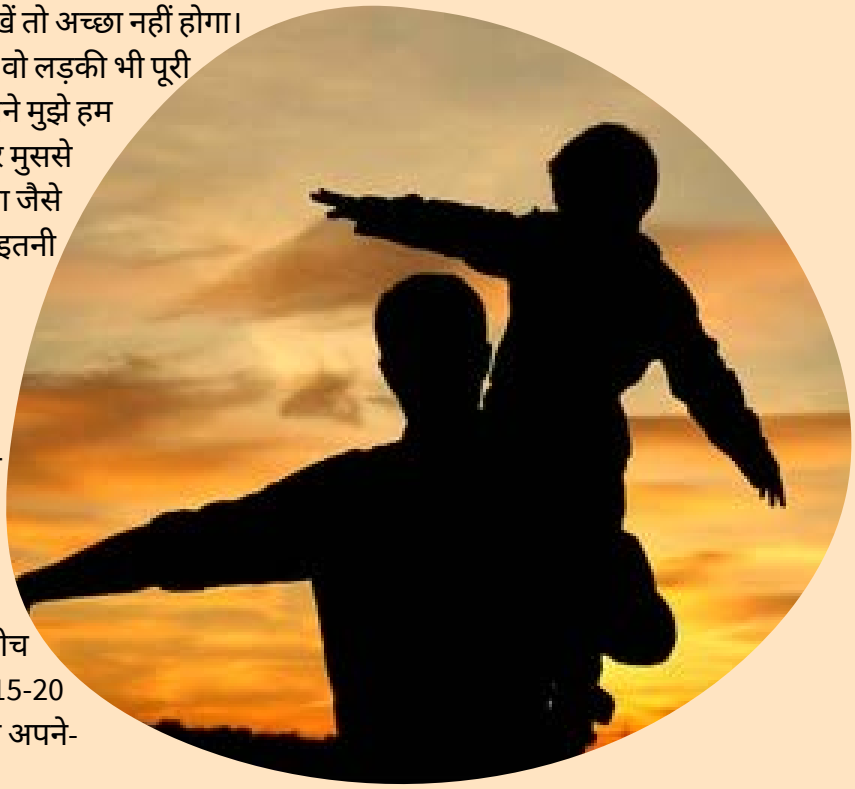

छुट्टी के दौरान मैंने देखा कि मेरे पिताजी कितनी मेहनत करके पैसे कमा रहे हैं, ताकि हम लोगों को किसी भी चीज की कमी न हो। वे इतना व्यस्त रहते थे कि अपनी नींद भी पूरी नहीं ले पाते थे। इतनी मुसीबत और कठिनाईयाँ झेलकर वो हम सबकी परवरिश करते थे, जिसका अहसास मुझे पूरी जिंदगी में नहीं हुआ था। मेरी माताजी जो कि एक गृहणी थी, वो भी पिताजी के साथ काम में हाथ बटाती थी। मेरे भैया नए कपड़ो को स्त्री करते थे (अपनी पढ़ाई के अलावा)। ये सब देखकर और वहाँ रहकर मुझे अहसास हुआ कि मैंने प्रेम प्रसंग के चलते अपना स्थानांतरण रोककर कितनी बड़ी गलती कर दी है और प्रेमिका के चक्कर में पैसों की भी काफी बर्बादी की है। उसी दिन से मैंने एक बात गांठ बांध ली कि अपने बचे हुए सेमेस्टर में अच्छे अंक अर्जित करके किसी बड़ी कंपनी में चयनित होकर जाना है तथा अपनी तथा परिवार की आर्थिक स्थिति को सुधारना है। मेरे पिताजी के साहस और परिश्रम को देखकर मेरे अंदर एक अलग ऊर्जा का संचार हुआ था।

उसके बाद आप यकीन नहीं मानोगे मैंने आने वाले सेमेस्टरों में उच्च अंक अर्जित करके टॉप किया तथा कुल 78% अंक अर्जित किए। मेरे अंतिम सेमेस्टर के पहले ही मुझे एस्सार स्टील इंडिया, सूरत, गुजरात में कैंपस सेलेक्शन के माध्यम से चयनित कर लिया गया। उस समय 2011 में यह कंपनी सबसे उच्चतम पैकेज देने वाली कंपनी थी। इसी के साथ कॉलेज में मेरी खोई हुई ईज्जत मुझे वापस मिल गई तथा मैं कॉलेज संपन्न करके गुजरात चला गया।

इसके बाद मैंने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। एस्सार स्टील, गुजरात में 6 वर्षों तक (2011-2017) काम करते-करते मैंने अपना बी.टेक. संपन्न किया तथा साथ- साथ सरकारी नौकरी के लिए भी अर्जी देता गया। कई बार ऐसा होता था कि सरकारी नौकरी में लिखित परीक्षा में तो पास हो जाता था किंतु साक्षात्कार में असफल हो जाता था। थोड़ी-बहुत निराशा तो होती थी लेकिन जब भी मैं बहुत ज्यादा निराश होता था तो अपने पिताजी के परिश्रम और साहस को याद करता था, जिससे मुझे आने वाली परीक्षाओं के लिए एक प्रेरणा मिलती और फिर मैं एक नई ऊर्जा के साथ परीक्षाओं की तैयारी में जुट जाता। लगातार विफलताओं के बाद और नई ऊर्जा के साथ किए गए परिश्रम ने आखिरकार अपना फल देना शुरू किया और मैं 2017 में मिधानि परिवार के साथ जुड़ गया।

अंत में मैं यह कहना चाहूँगा कि जब तक इंसान को ठोकर नहीं लगती, तब तक उसे सही या गलत का पता नहीं चलता। जब तक खुद का नुकसान नहीं होता, तब तक चीजों की अहमियत पता नहीं चलती और तभी सही मायने में जिंदगी जीने का लक्ष्य मिलता है कि हमें जिंदगी में आगे क्या करना है। यकीन मानिए दोस्तों अगर आप सही हैं और आपकी राह सही है तो उस राह में मुश्किलें तो बहुत आएंगी लेकिन उस राह को मंजिल तक पहुंचाने के लिए पूरी कायनात एकजुट हो जाएगी। इसलिए कर्म करते रहिए, फल की चिंता मत कीजिए।

" सपने और लक्ष्य में एक ही अंतर है, सपने के लिए बिना मेहनत की नींद चाहिए और लक्ष्य के लिए बिना नींद की मेहनत। "

काव्यकुंज

प्यार क्या है!

विजय कुमार चौधरी
क्रेन ऑपरेटर

प्यार क्या है!
जो बोर्ड की परीक्षा में फेल कराए
वही प्यार है।

जब मां-बाप की बात को ठुकराए
वही प्यार है।

स्कूल जाने के बजाय लड़की के
घर का चक्कर लगवाए
वही प्यार है।

किताब के पन्नों में लड़की का चेहरा
नजर आए
वही प्यार है।

दीवारों तथा बोर्ड परीक्षा में
लड़की का नाम लिखकर आए
वही प्यार है।

लड़की दूसरे से शादी करके चली जाए
लड़का बस तड़पता रह जाए
वही प्यार है।

न मिले नौकरी और न मिले छोकरी
फेसबुक पर जख्म दिखाए
वही प्यार है।

हिंदी दिवस समारोह के अवसर पर आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम की झलकियाँ

मिधानि गीत प्रस्तुत करते हुए
श्रीमती रमा मल्लिका, कनि.का.अधी. (क्रय), श्रीमती पी वर्षा, कनि.कार्य. (वित्त), श्रीमती के सुरेखा, वरि. सहा. (गु. प्र.)

देशभक्ति गीत प्रस्तुत करते हुए
श्री अरिजीत बनर्जी, प्रबंधक (एपीडी)

देशभक्ति गीत प्रस्तुत करते हुए
श्री दीपक पार्थसारथी, उ.प्र. (मा.संसा.)

लोकगीत सुनाते हुए
श्री कुमार मंगलेश, प्रबंधक (सीआरएम)

हास्य कविता सुनाते हुए
श्री रोहित निगुडकर, उ.म.प्र. (वित्त)

हिंदी फिल्मों की धुन बजाते हुए
श्री प्रतीक शर्मा, प्रबंधक (एसएमजी)

हिंदी दिवस समारोह के उपलक्ष्य में आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं को डॉ. एस के झा, सीएमडी, मिधानि, श्री एन गौरी शंकर राव, निदेशक (वित्त) तथा डॉ. नरेशबाला, उप निदेशक व प्रभारी, हिं.शि.यो. हैदराबाद द्वारा नकद पुरस्कार व उपहार से सम्मानित किया गया। प्रस्तुत है झलकियाँ:

श्री सी सुरेश, वरिष्ठ सहायक, (गुणता प्रबंधन)
पुस्तक परिचय-III, प्रेरक प्रसंग-III

श्री अरिजीत बनर्जी, प्रबंधक (सामरिक योजना विभाग)
गायन -II , शब्दावली-I (अन्य भाषी वर्ग), वाक्-I, प्रश्नमंच-I

श्री संदीप पवार, कनिष्ठ तकनीशीयन (सीआरएस)
प्रेरक प्रसंग-II

श्रीमती बी. पुष्पा, सहायक प्रबंधक (आईटी)
निबंध लेखन-II

डॉ. सौरभ दीक्षित, प्रबंधक (एएमडी)
वाक्-II, चित्र क्या कहता है-I

श्री रोहित बाखला, तकनीकी सहायक (इन्वेस्टमेंट कास्टिंग)
प्रेरक प्रसंग-III

डॉ. प्रवीण ज्योति, प्रबंधक (चिकित्सा सेवाएँ)
वाक्-II, निबंध लेखन-II, प्रश्नमंच-III

श्री सी सुदर्शन वेंकटेश, कनि. स्टाफ नर्स (चिकित्सा सेवाएँ)
पुस्तक परिचय-I, प्रश्नमंच-III

श्री सरस्वती चंद्र, सहायक (गुणता प्रबंधन)
शब्दावली-II, प्रश्नमंच-II

श्री गिरिश देवांगन, वरिष्ठ तकनीकी सहायक (गुणता प्रबंधन)
चित्र क्या कहता है-III

श्री हरीश देवांगन, वरिष्ठ तकनीकी सहायक (गुणता प्रबंधन)
पुस्तक परिचय-I, प्रेरक प्रसंग-I

श्री बी. रमेश, उप प्रबंधक (गुणता प्रबंधन)
प्रेरक प्रसंग-II

कुछ झलकियाँ.....

डॉ. चंदन हलदर, वरिष्ठ प्रबंधक (अनुसंधान एवं विकास)
चित्र क्या कहता है-II

श्री शुभदीप घोष, उप महाप्रबंधक (भंडार)
चित्र क्या कहता है-I, वाक्-II

श्री राजकुमार साहू, वरिष्ठ तकनीकी सहायक (यूटिलिटिस)
निबंध-I , पुस्तक परिचय-II, वाक्-III, प्रश्नमंच-III

श्री पीयूष पालिवाल, प्रबंधक (रेफ्रैक्टरी अनुरक्षण)
शब्दावली-I, निबंध-II, चित्र क्या कहता है-II

श्री दीपक पार्थसारथी, उप प्रबंधक (मा.संसा.)
प्रेरक प्रसंग-I, गायन-प्रोत्साहन पुरस्कार

श्री वी के सुदर्शन, उप प्रबंधक (सामरिक योजना विभाग)
प्रश्नमंच-I

श्री के सतीश कुमार, वरिष्ठ तकनीकी सहायक (गुणता प्रबंधन)
प्रश्नमंच-II

श्री कुमार मंगलेश, प्रबंधक (सीआरएम)
वाक्-II, निबंध-III

श्रीमती के लक्ष्मी प्रस्न्ना, उप प्रबंधक (आईटी)
निबंध-II

श्रीमती ए नंदिनी, मास्टर तकनीकी सहायक (गु.प्र.)
प्रश्नमंच-II, चित्र क्या कहता है-III

श्रीमती सीएच दिव्या, डि. अभि. (आर एवं एम)
पुस्तक परिचय-II

श्री पॉल अंटोनी, सीएस एवं सीओ (सीएस)
प्रश्नमंच-I

श्री एनवीएस पवन कुमार, प्रबंधक (वित्त)
गायन-III

श्री श्रीनिवास कन्ना, तकनीशीयन (एचआरएम)
गायन-I

हिंदी दिवस समारोह में हिंदी में कार्यालय के कामकाज के लिए प्रोत्साहन योजन के अंतर्गत कर्मचारियों को डॉ. एस के झा, सीएमडी, मिधानि के करकमलों से नकद पुरस्कार तथा प्रमाणपत्र से सम्मानित किया गया।

प्रथमः रु. 5500/-, द्वितीयः रु. 3500/-, तृतीयः रु.2500/-, चतुर्थः रु. 1000/-

प्रस्तुत है झलकियाँः

श्री सरस्वती चंद्र, सहायक (गुणता प्रबंधन)
प्रथम

डॉ. प्रवीण ज्योति, प्रबंधक (चिकित्सा सेवाएँ)
द्वितीय

श्रीमती बी. पुष्पा, सहायक प्रबंधक (आईटी)
द्वितीय

श्रीमती के सुरेखा, कनिष्ठ सहायक (गु.प्र.)
द्वितीय

श्री पी प्रदीप वरप्रसाद बाबू, उप प्रबंधक (गु.प्र.)
द्वितीय

श्री अंजय्या, कनि. सहायक (वित्त)
तृतीय

श्री आनंद चारी, कनि. सहायक (विपणन)
चतुर्थ

श्री बी रामचंद्रा, सहायक प्रबंधक (प्रशा.)
चुतर्थ

श्री बी मल्लेश, कनि. सहायक (विपणन)
चुतर्थ

श्री प्रतीक शर्मा, प्रबंधक (एसएमजी)
चुतर्थ

श्री के शिवराम प्रसाद, एसओएस (पीपीडी)
चुतर्थ

श्री जे साईबाबू,अवर प्रबंधक (सुरक्षा)
चुतर्थ

कुछ झलकियाँ.....

श्री अरिजीत बनर्जी, प्रबंधक (सामरिक योजना विभाग)
चतुर्थ

श्री दीपक पार्थसारथी, उ.प्र. (मा.संसा.)
चतुर्थ

कार्यालय का कामकाज हिंदी में करने के लिए प्रोत्साहन योजन के अंतर्गत पुरस्कृत कर्मचारी....

श्री के श्रीनिवास राव, सुरक्षा निरीक्षक (सुरक्षा)
प्रथम

श्री रत्नेश के भट्ट, कार्यालय अधीक्षक (सुरक्षा)
प्रथम

श्री ए महेश, वरिष्ठ सहायक (भंडार)
प्रथम

श्री के वेंकटेश, वरि. सहा. (समय कार्यालय)
तृतीय

श्री कपिल कुमार अग्रवाल, उ. प्र. (वि. एवं ले.)
तृतीय

श्रीमती टी अनिता, कनि. स्टा.नर्स (एफएसी)
तृतीय

श्री मनु बाबु, कनि. स्टा.नर्स (एफएसी)
चतुर्थ

श्री लक्ष्मा रेड्डी बसि रेड्डी, कनि. स्टा.नर्स (एफएसी)
चतुर्थ

श्रीमती स्वप्न प्रिया, कनि.स्टा.नर्स (एफएसी)
चतुर्थ

श्री बी धनराज, सहायक प्रबंधक (सतर्कता)
चतुर्थ

श्री टी विनोद कुमार, सुरक्षा निरीक्षक (सुरक्षा)
चतुर्थ

श्री एस प्रदीप, वरिष्ठ सहायक (सुरक्षा)
चतुर्थ

श्री एन कुप्पा स्वामी, वरि.प्र.(युटिलिटिज)
चतुर्थ

पॉल अंटोनी, सीएस एवं सीओ (सीएस)
चतुर्थ

कार्यालय का कामकाज हिंदी में करने के लिए प्रोत्साहन योजन के अंतर्गत पुरस्कृत कर्मचारी....

श्रीमती टी वी लक्ष्मी, परिचारक (डाक अनुभाग)
चतुर्थ

श्री एन राजू, सहायक (डाक अनुभाग)
चतुर्थ

श्रीमती एमबी निवेदिता, वरि.सहा. (वित्त)
चतुर्थ

श्री एनवीएस पवन कुमार, प्रबंधक (वि.एवं ले.)
चतुर्थ

श्रीमती ए आर रश्मि, प्रबंधक (मा.संसा.)
चतुर्थ

श्रीमती एम उदया श्री, वरि.सहा. (मा.संसा.)
चतुर्थ

श्रीमती एन शिल्पा, सहायक (मा. संसा.)
चतुर्थ

श्री एम वी जी स्वामी, वरि.कार्य. ग्रेड II (मा.संसा.)
चतुर्थ

श्री पी सुनील कुमार, उ.प्र. (मा.संसा. एवं प्रशा.)
चतुर्थ

श्री वी वेणु माधव, वरि. सहा. (समय कार्यालय)
चतुर्थ

श्री एसवीएन पवन कुमार बीएच, उ.प्र. (मा.संसा.)
चतुर्थ

श्री पी शंकर सिंह, वरि.कार्य. ग्रेड II (क्रय)
चतुर्थ

श्री आर अरविंद कुमार, सहायक (विपणन)
चतुर्थ

श्री विनय कुमार, सहायक (विपणन)
चतुर्थ

श्री अमित सिंह, प्रबंधक (विपणन)
चतुर्थ

श्री डी वी ए श्रीनिवास, कनि.का. अधी. (विपणन)
चतुर्थ

श्री बी रतन सिंह, कनि.का.अधी. (क्रय)
चतुर्थ

श्री के संदीप, प्रबंधक (क्रय)
चतुर्थ

सभी पुरस्कार विजेताओं को संकल्प संपादक मंडल की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

हिंदी दिवस समारोह के उपलक्ष्य में आयोजित प्रतियोगिताओं के निर्णायकों का सम्मान

श्रीमती कल्पना डाँग, संगीत अध्यापिका
गायन प्रतियोगिता की निर्णायक

श्रीमती अनुराधा पांडेय, हिंदी अधिकारी, एएसएल
प्रेरक प्रसंग तथा पुस्तक परिचय की निर्णायक

श्री शुभदीप घोष,उप महाप्रबंधक (भंडार)
गायन प्रतियोगिता के निर्णायक

श्री विक्रम महान कैरे, अपर महाप्रबंधक (केएपीपी एवं रेलवे)
वाक् प्रतियोगिता के निर्णायक

ईमानदारी का जीवन

पूर्णिमा रमेश
उप प्रबंधक (इंस्ट्रुमेंटेशन)

ईमानदारी का जीवन व्यतीत करें: ईमानदारी का जीवन व्यतीत करने का तात्पर्य है कि हम कभी भी अपने आप से प्रश्न करने में समय और ऊर्जा खर्च न करें। जब हम अपने दिल की सुनते हैं और सही चीजें करते हैं तो जीवन सामान्य बन जाता है। हमारा जीवन और कार्य सभी के देखने के लिए खुला रहना चाहिए और हमें कुछ भी छिपाने के बारे में चिंता नहीं होनी चाहिए। जब हम ईमानदार रहते हैं तब हम अपने मार्गदर्शकों, सहकर्मियों और टीम का भरोसा प्राप्त करते हैं और विश्वसनीय होते हैं। जब हम अपने कार्यों के लिए खुद को जिम्मेदार मानते हैं तो हम दूसरों के लिए आदर्श बन जानते हैं और लोग हमारा अनुकरण करते हैं। जीवन में हमारी सफलता पर इन सभी का प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है। वे लोग ईमानदारीपूर्ण जीवन व्यतीत करते हैं और कार्य करते हैं उन्हें प्रोन्नति देने पर विचार किया जाता है क्योंकि ईमानदारी नैतिक नेतृत्व का प्रमाण है और जब हम ईमानदारी प्रदर्शित करते हैं तब हम सभी को दिखाते हैं कि हम पर विश्वास किया जा सकता हैं।

हमारी कार्य प्रकृति में ईमानदारी कैसे अपनाएँ?

1. अपने मूल्य परिभाषित करें

ऐसे महत्वपूर्ण मूल्य जो परिणामों की परवाह नहीं करते, तुम्हें उनसे कभी समझौता नहीं करा चाहिए।

2. अपने प्रत्येक चुनाव का विश्लेषण करें

हमेशा सही चुनाव करें, तब भी जब कोई आपको देख न रहा हो। यदि आप अपने चुनाव के बारे में निश्चित नहीं हैं कि वह सही है या नहीं तो **अपने आप से ये दो प्रश्न पूछें:** (I) यदि मेरा चुनाव सभी के देखने के लिए समाचारपत्र के पहले पृष्ठ पर छपता है तो, क्या इससे मुझे संतोष महसूस होगा? (II) यदि मेरा चुनाव यह होगा तो, क्या बाद में मैं खुद को संतुष्ट महसूस करुँगा।

3. **ईमानदारी को बढ़ावा दें:** ईमानदार लोगों में प्राय: समान गुण होते है: वे विनम्र, दृढ़, स्वाभिमानी और आत्मविश्वासी होते हैं। ये गुण महत्वपूर्ण हैं क्योंकि आप गलत चुनाव करने के लिए दूसरों के अत्यंत दबाव में रहोगे। स्वयं को और अपने विश्वासों को जानने में समय व्यतीत करें। ईमानदारी दिखाने वाले और आपके निर्णयों का समर्थन करने वाले अन्य लोगों से दोस्ती करें। ऐसा करना ईमानदारी को बढ़ावा देने में सहायता करेगा।

काव्यकुंज

मासूम सा बच्चा

रोहित निगुड़कर
उप महा प्रबन्धक (वित्त एवं लेखा)

मन के गहरे कोने में ,
मासूम सा बच्चा रहता है।
दुनिया के तौर तरीकों से ,
बेचारा सहमा रहता है।

पूछता है भोलेपन से ,
झूठों की दुनिया में क्यों आया।
बेकारी , धोखा, बनावटीपन,
मैं तो इन सब से उकताया।

लौटा दो वह अल्हड़ बातें,
वह गलती जो रबर से मिट जाए।
वह नन्हें मुन्ने यार मेरे,
जो चॉकलेट से जिगरी बन जाए।

स्लोगन/आकर्षक वाक्यांश लेखन प्रतियोगिता
में हिंदी में लिखित पुरस्कृत स्लोगन

मिधानि में
राजभाषा नीति के प्रभावी कार्यान्वयन
के लिए
अपनाएँ जा रहे
आधार स्तंभ '12' प्र*

प्रेरणा
प्रोत्साहन
प्रेम
प्राइज़ अर्थात पुरस्कार
प्रशिक्षण
प्रयोग
प्रचार
प्रसार
प्रबंधन
प्रमोशन (पदोन्नति)
प्रतिबद्धता
प्रयास

*राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम 2021-22 से उद्धृत

मिश्र धातु निगम लिमिटेड

MISHRA DHATU NIGAM LIMITED

(भारत सरकार का उद्यम, रक्षा मंत्रालय A Govt. of India Enterprise, Min. of Defence)

www.midhani-india.in